

V. वित्तीय बाजार

वैश्विक वित्तीय बाजार में अनिश्चितता और जोखिम के कम होने और वर्ष 2009 की तीसरी तिमाही में विविध बाजार खंडों की गतिविधियों में सुदृढ़ बेहतर आने की पृष्ठभूमि में दबाव में और कमी दर्ज की गयी, अलबत्ता, ऋण और बंधक बाजारों में दुर्बलता बनी रही। उन्नत अर्थव्यवस्थाओं और ईएमई, दोनों में इक्विटी बाजारों ने वैश्विक संकट के परिणामस्वरूप हुए घाटे के बड़े भाग की पुनःप्राप्ति की; वैश्विक निर्गमों में तेजी आने से बांड बाजारों में सामान्य स्थिति लौटी; सरकारी और कंपनी - वित्तीय और गैर वित्तीय - के क्रेडिट स्प्रेड में और कमी आई। घरेलू वित्तीय बाजारों ने सामान्य रूप से कार्य करना जारी रखा और उनमें वर्ष 2009-10 की दूसरी तिमाही में बाजार कार्यकलाप में महत्वपूर्ण सुधार के अतिरिक्त जोखिम प्रीमियम में और नरमी देखी गयी। जबकि मुद्रा बाजार प्रचुर चलनिधि और न्यून नीतिगत दरों के प्रभाव को प्रतिबिंबित करता रहा, दीर्घावधि सरकारी बांड प्रतिफल ने सरकार के उधार कार्यक्रमों के बारे में चिंता को प्रतिबिंबित किया। अमरीकी डॉलर की तुलना में रुपये में मूल्यवृद्धि की प्रवृत्ति देखी गयी, जो अंशतः पूँजी अंतर्वाह में पुनरुत्थान और अधिकांश मुद्राओं की तुलना में अमरीकी डॉलर की सामान्य दुर्बलता को प्रतिबिंबित करती है। जबकि द्वितीयक इक्विटी बाजार अधिकांश अन्य ईएमई से बेहतर कार्य करता रहा, प्राथमिक बाजार में प्राथमिक निर्गमों, प्राइवेट प्लेसमेंट और म्यूच्युअल फंडों द्वारा संसाधन जुटाये जाने से संबंधित कार्यकलाप पुनः अधिक किये जाने लगे।

V.1 वैश्विक वित्तीय बाजारों में जो सुधार वर्ष 2009-10 की दूसरी तिमाही में आरंभ हुआ था वह उसी गति से तीसरी तिमाही में भी जारी रहा और सभी आस्ति श्रेणियों में चलनिधि और ऋण जोखिम में महत्वपूर्ण कमी हुई।

हालाँकि ऋण और बंधक बाजारों के कुछ खंडों में अभी भी दुर्बलता बनी हुई है। वैश्विक बाजार स्थिति में दबाव कम होने के साथ घरेलू वित्तीय बाजारों में भी जोखिम प्रीमियमों में और कमी तथा आस्ति कीमतों में महत्वपूर्ण पुनरुत्थान देखा गया - जिसने उस पैटर्न को आगे बढ़ाया, जो वर्ष 2009-10 की पहली तिमाही में आरंभ हुआ था। वृद्धि संबंधी दृष्टिकोण के बारे में बाजार-बोध में सुधार होने, प्रणाली में प्रचुर चलनिधि के होने और न्यून नीति-दरों के जारी रहने जैसे तत्वों के संयोग ने बाजार की स्थिति को समग्र रूप से सहज बनाने में सुविधा प्रदान की। उधार देने की दरों में क्रमिक रूप से नरमी आने पर भी, जिसने एक अंतराल के साथ मौद्रिक नीति के सुधरे हुए संचलन की ओर संकेत किया, ऋणवृद्धि में और नरमी आयी। इक्विटी बाजारों ने कीमतों में पुनरुत्थान के अतिरिक्त प्राथमिक बाजार के कार्यकलाप में काफी सुधार का प्रदर्शन किया, जिसमें आइपीओ, प्राइवेट प्लेसमेंट और म्यूच्युअल फंडों द्वारा संसाधन जुटाने में उच्चतर गति देखी गयी।

अंतरराष्ट्रीय वित्तीय बाजार

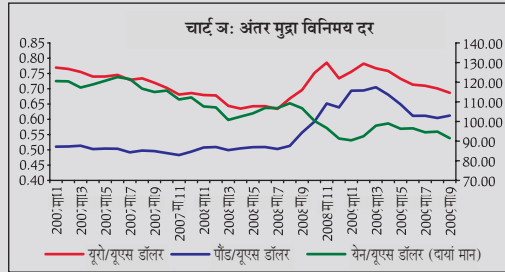
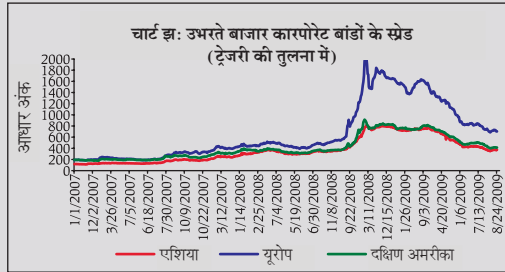
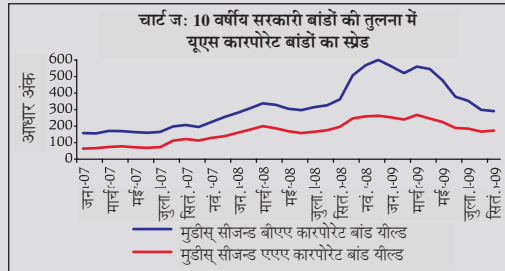
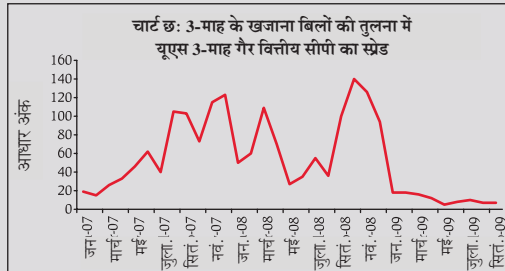
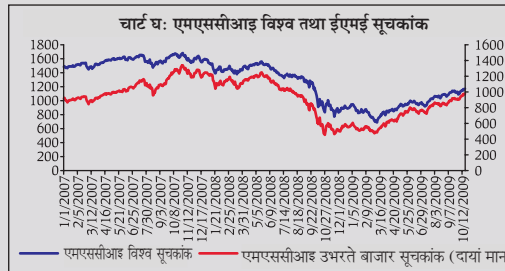
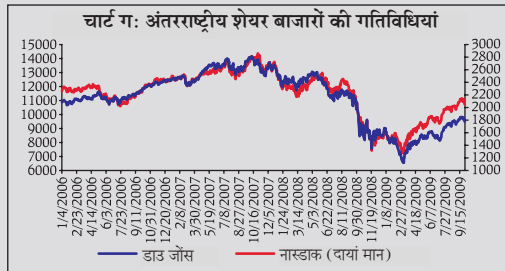
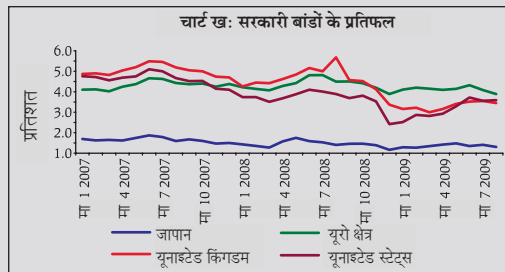
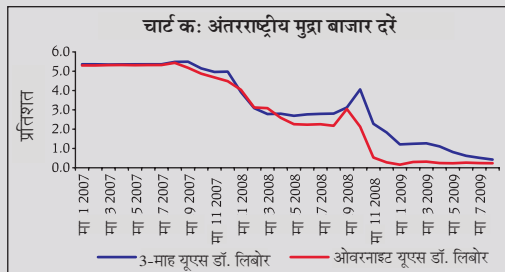
V.2 वैश्विक वित्तीय बाजारों में वर्ष 2009 की दूसरी तिमाही में स्थिरता के संकेत दिखाई पड़े, जिसमें उन्नत अर्थव्यवस्थाओं में आर्थिक स्थिति में ह्रास की गति कम होने के आरंभिक संकेत मिलने, उम्मीद से बेहतर कंपनी कार्यानिष्पादन और सरकारों तथा केंद्रीय बैंकों द्वारा भरोसा बनाये रखने के लिए किये गये उपायों की पृष्ठभूमि में कुछ बाजार खंडों के कार्यकलाप में तगड़े प्रतिक्षेप का प्रदर्शन हुआ। वित्तीय बाजारों ने वर्ष 2009 की तीसरी तिमाही में विविध आस्ति श्रेणियों के संबंध में बढ़ती जोखिम उठाने की प्रवृत्ति और घटते जोखिम प्रीमियम के साथ और सुधार का प्रदर्शन किया। बीआइएस क्वार्टरली रिव्यू (सितंबर 2009) के अनुसार जबकि अंतर-बैंक मुद्रा बाजारों में प्रमुख स्प्रेड उन स्तरों तक कम हो गया, जो वर्ष 2008 के

आरंभ से अबतक देखा नहीं गया था, ऋण बाजारों में भी सुधार स्पष्ट दिखाई दिया, हालाँकि महत्वपूर्ण खंडों ने केंद्रीय बैंक के समर्थन पर भरोसा जारी रखा।

V.3 वर्ष 2009 की तीसरी तिमाही में मुद्रा बाजार में दबाव का कम होना इस बात से स्पष्ट था कि वैश्विक संकट के आरंभिक चरण के दौरान अंतर-बैंक दरों में जो ऊँचाई देखी गयी थी, उसमें महत्वपूर्ण और निरंतर नरमी आयी (चार्ट V.1 क)। बांड बाजार में भी घटते चलनिधि प्रीमियम और जोखिम वहन क्षमता की वापसी प्रतिबिंबित हुई। तथापि, सरकारी बांड की आय में कुछ सामयिक अस्थिरता देखी गयी, जो वैश्विक पुनरुत्थान के भावी पथ के बारे में बदलते बोध और मौद्रिक नीतियों के दृष्टिकोण में प्रत्याशित परिवर्तन जैसे तत्वों के कारण हुई थी। दीर्घावधि सरकारी बांड से आय, जो बढ़ते राजकोषीय घाटे के संबंध में चिंता के कारण वर्ष 2009 की पहली दो तिमाहियों में बढ़ी थी, में वर्ष 2009 की तीसरी तिमाही में स्थिरीकरण होने के संकेत दिखाई दिये, जो समष्टि आर्थिक स्थिति और राजकोषीय एवं मौद्रिक नीतियों के संबंध में बदलते दृष्टिकोण के चलते हुआ था (चार्ट V.1 ख)। इसके अतिरिक्त, वर्ष 2009 की पहली दो तिमाहियों में आय-वक्र में जो वृद्धि देखी गई थी वह तीसरी तिमाही में उतनी स्पष्ट नहीं थी। तथापि, अमरीका में दीर्घावधि बांड आय बड़े सरकारी कर्ज और उधार कार्यक्रमों को प्रतिबिंबित करती रही।

V.4 विकसित अर्थव्यवस्थाओं और ईएमई में इक्विटी बाजारों में मार्च 2009 में स्पष्ट पुनरुत्थान और कम अस्थिरता देखी गयी, जिसमें विशिष्ट प्रतिकूल खबरों/धारणाओं के प्रत्युत्तर में बीच-बीच गिरावट आती रही (चार्ट V.1 ग, घ और ड)। वर्ष 2009 की तीसरी तिमाही में वैश्विक इक्विटी कीमतों में पुनरुत्थान की गति और तेज हुई और उसने अधिक दृढ़ पैटर्न का प्रदर्शन किया। डाउ जोन्स और नास्डाक इक्विटी सूचकांकों, दोनों ने वर्ष 2009 की तीसरी तिमाही में पूर्ववर्ती तिमाही की तुलना में लगभग

चार्ट V.1: वैश्विक वित्तीय बाजार गतिविधियों के संकेतक



स्रोत: आइएमएफ, फेडरल रिजर्व ऑफ सेंट लुई तथा ब्लूमबर्ग

16 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की। इस प्रकार बाजार घरेलू धन का एक हिस्सा पुनः प्राप्त करने में समर्थ हुए, जिसे वे वित्तीय संकट के परिणामस्वरूप खो चुके थे। यद्यपि इक्विटी बाजारों में वर्ष 2009 की दूसरी तिमाही के लिए उम्मीद से बेहतर आँकड़ों और वित्तीय क्षेत्र में महत्वपूर्ण सुधार तथा आय प्रत्याशाओं में ऊर्ध्वमुखी बदलाव के साथ कंपनी आय के परिणामों के फलस्वरूप भारी तेजी देखी गयी, फिर भी आर्थिक समुत्थान की गति के संबंध में किसी नकारात्मक खबर के प्रति निवेशकों की प्रतिक्रिया के कारण बाजार में बीच-बीच में अस्थिरता की घटनाएँ होती रहीं। इसके अतिरिक्त, वित्तीय क्षेत्र की लाभप्रदता की गुणवत्ता और धारणीयता के संबंध में चिंता से बाजार आशंकित होते रहे हैं, जो बैंकों और बीमा क्षेत्रों के लिए अभी भी अपेक्षाकृत उच्चतर क्रेडिट डिफाल्ट स्पैप स्प्रेड से स्पष्ट है (चार्ट V.1 च)।

V.5 सरकार और कंपनी (वित्तीय एवं गैर वित्तीय) दोनों के क्रेडिट स्प्रेड में और भी संकुचन हुआ, जो जोखिम और चलनिधि प्रीमियमों में महत्वपूर्ण हास की ओर इंगित करता है (चार्ट V.1 छ, ज और झ)। ऋण बाजार की स्थिति में सुधार भी वैश्विक कंपनी बांड के निर्गम के उच्च स्तर से स्पष्ट हुआ, यद्यपि इसके साथ ही बैंकों द्वारा डीलिवरेजिंग को समाप्त कर दिया गया। इसके अतिरिक्त, अमरीका में जबकि वाणिज्यिक पत्र (सीपी) बाजार में समुत्थान के संकेत मिले, आस्ति समर्थित प्रतिभूति (एबीएस) और वाणिज्यिक बंधक समर्थित प्रतिभूति (सीएमबीएस) बाजार दुर्बल रुख प्रतिबिंबित करते रहे। न्यून जोखिम स्प्रेड और उन्नत बाजार चलनिधि ने कंपनियों द्वारा घरेलू तथा अंतरराष्ट्रीय बांड निर्गम की गति को बढ़ाने में मदद की।

V.6 ईएमई इक्विटी बाजारों ने निवेशकों की बढ़ती जोखिम सहनीयता को प्रतिबिंबित किया, जिसने आस्ति-कीमतों को समर्थन देना जारी रखा था (चार्ट V.1 घ)।

ईएमई में पूँजी प्रवाह के पुनरारंभ और निवेशकों की जोखिम वहन क्षमता लौटने से, जिसे एशिया में घरेलू उपभोग माँग में तगड़े समुत्थान और प्रतिक्षेप ने सहारा दिया था, लैटिन अमरीका और मध्यपूर्व के पण्य निर्यातक देशों के आरंभिक समुत्थान ने वर्ष 2009 की तीसरी तिमाही में इक्विटी की कीमतों में वृद्धि में और गति प्रदान की। मार्गन स्टेनली कैपिटल इंटरनैशनल (एमएससीआइ) सूचकांक वर्ष 2009 की तीसरी तिमाही में 17.4 प्रतिशत बढ़ा, हालाँकि इक्विटी कीमतों में वृद्धि की गति सभी ईएमई में घरेलू तत्वों पर निर्भर करते हुए भिन्न-भिन्न थी (सारणी 5.1)। मध्य सितंबर 2009 और अंत-मार्च 2009 के बीच एमएससीआइ 56.9 में प्रतिशत की वृद्धि हुई।

V.7 विदेशी मुद्रा बाजार में अमरीकी डॉलर, जिसमें वर्ष 2009-10 की पहली तिमाही में मूल्यहास हुआ था, उसमें अमरीका में गिरते पूँजी प्रवाह, अमरीका में सरल मौद्रिक नीति और डॉलर के संबंध में बाजार के रुझान में परिवर्तन की पृष्ठभूमि में दूसरी तिमाही के दौरान मूल्यहास होता रहा (चार्ट V.1 ज)। अंत-मार्च 2009 और 20 अक्टूबर 2009 के बीच अमरीकी डॉलर में यूरो के विरुद्ध 11.1 प्रतिशत, पौंड स्टर्लिंग के विरुद्ध 12.6 प्रतिशत और जापानी येन के विरुद्ध 7.8 प्रतिशत मूल्यहास हुआ। ईएमई की मुद्राओं में वर्ष 2009 की तीसरी तिमाही में मूल्यवृद्धि की प्रवृत्ति देखी गयी, जो अंशतः अधिक आय के लिए विदेशी निवेशकों के प्रति उनकी आपेक्षिक आकर्षकता को प्रतिबिंबित करती है। जहां तक एशियाई मुद्राओं की बात है, अमरीकी डॉलर में भारतीय रुपये, इंडोनेशियन रुपैयाह, मलेशियन रिंगिट, दक्षिण कोरियाई वॉन और थाई बाथ के विरुद्ध मूल्यहास हुआ। अन्य उभरते बाजारों की मुद्राओं में अमरीकी डॉलर में दक्षिण अफ्रीकी रैंड, ब्राजील के रीअल, मेक्सिको के पेसो, तुर्की के लीरा और रूस के रूबल के विरुद्ध मूल्यहास दर्ज किया गया। तथापि, इसी अवधि के दौरान इसमें अर्जेंटीना के पेसो के विरुद्ध मूल्यवृद्धि हुई (सारणी 5.1)।

सारणी 5.1: उभरती बाजार अर्थव्यवस्थाओं में मुद्रा तथा स्टॉक की कीमतों में परिवर्तन

(प्रतिशत)							
मदे	मार्च 08 के अंत में@	मार्च 09 के अंत में@	20 अक्टूबर 2009*	मदे	मार्च 08 के अंत में@	मार्च 09 के अंत में@	12 अक्टूबर 2009*
1	2	3	4	1	5	6	7
अमरीकी डॉलर के मूल्य में वृद्धि(+)/गिरावट(-)				स्टॉक की कीमतों में घट-बढ़			
जापानी येन	-14.9	-2.0	-7.8	इंडोनेशिया (जकार्ता कंपोजिट)	33.7	71.3	67.2
चीनी युआन	-9.3	-2.6	-0.1	ब्राजील (बोवेस्पा)**	33.1	56.6	47.5
रूसी रूबल	-9.7	44.3	-13.9	थाईलैंड (सेट कंपोजिट)	21.3	74.2	67.2
तुर्की लीरा	-5.8	27.7	-13.3	भारत (बीएसई सेंसेक्स)	19.7	75.4	71.9
भारतीय रुपया	-8.3	27.5	-9.6	दक्षिण कोरिया (कोस्पी)	17.3	35.9	40.2
इंडोनेशियाई रुपैयाह	1.1	25.6	-19.1	चीन (संघाई एसई कंपोजिट)	9.1	22.0	19.6
मलेशियाई रिंगिट	-7.8	14.4	-7.9	ताइवान (ताइवान इडेक्स)	8.7	45.9	41.0
द.कोरियाई वॉन	5.5	38.9	-14.6	रूस (आरटीएस)	6.1	107.1	77.7
थाई बाथ	-10.2	12.9	-5.8	मलेशिया (केएलएसई कंपोजिट)	0.1	41.9	39.5
अर्जेंटिना	2.1	17.3	2.9	सिंगापुर (स्ट्रेट टाइम्स)	-4.9	57.7	56.6
ब्राजीलियन रियल	-17.0	31.2	-23.4				
मेक्सिकन पेसो	-3.5	32.9	-8.6				

@ : वर्ष-दर-वर्ष परिवर्तन * : मार्च 2009 के अंत की तुलना में परिवर्तन ** : आंकड़े 09 अक्टूबर 2009 के हैं।
स्रोत: ब्लूमबर्ग तथा आइएफएस, आइएमएफ।

देशी वित्तीय बाजार

V.8 पूरे संकट के दौरान भारत में वित्तीय बाजार सामान्य ढंग से काम-काज करते रहे। तथापि, वित्तीय बाजार की स्थिति अंतरराष्ट्रीय बाजारों के अनुरूप कठोर बन गयी और यह बड़े क्रेडिट स्प्रेड और उच्चतर चलनिधि प्रीमियम में प्रतिबिंबित हुई। तथापि, वित्तीय बाजार इस स्थिति से जोखिम बोध और परिमाण के पूर्व-लीमन स्तर पर वापस लौटने के कुछ संकेतों के साथ अन्यत्र अपने समकक्षों की तुलना में जल्दी ही उबर गये। वर्ष 2009-10 की दूसरी तिमाही में विदेशी वित्तीय बाजारों का वातावरण और अनुकूल होने के साथ घरेलू बाजारों में और सुधार दर्ज किया गया। मुद्रा बाजार में माँग दर अनौपचारिक एलएफएफ कोरीडोर के भीतर बना रहा, जबकि परिमाण में बढ़ोतरी हुई, जो विदेशी वित्तीय बाजारों में जोखिम और चलनिधि प्रीमियम में कमी होने की ओर इशारा करता है। भारतीय रुपये में प्रमुख मुद्राओं के विरुद्ध सामान्यतः मूल्यवृद्धि देखी गयी, क्योंकि ईएमई आस्तियों के लिए अभिलाषा

बढ़ी और पूँजी प्रवाह की गति और तेज हुई। ऋण बाजार में, अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों (एससीबी) की उधार दरों में और नरमी आयी, हालाँकि बैंक ऋण के तेज होने के संबंध में चिंता बनी रही। सरकारी प्रतिभूति बाजार के कार्यक्रमलाप में वर्ष 2009-10 की दूसरी तिमाही में और तेजी आयी, क्योंकि सितंबर के अंत तक सरकार के सकल बाजार उधार कार्यक्रम का 69.3 प्रतिशत भाग पूरा हो गया। रिजर्व बैंक द्वारा सुनिश्चित की गयी प्रचुर चलनिधि की स्थिति और निजी क्षेत्र को ऋण में कम वृद्धि होने के चलते बैंक जमा में उच्च वृद्धि बनी रही, जिसके कारण बांड आय पर दबाव को रोका जा सका। भारतीय इक्विटी बाजार ने अधिकांश ईएमई से बेहतर कार्यनिष्पादन किया।

चलनिधि स्थिति

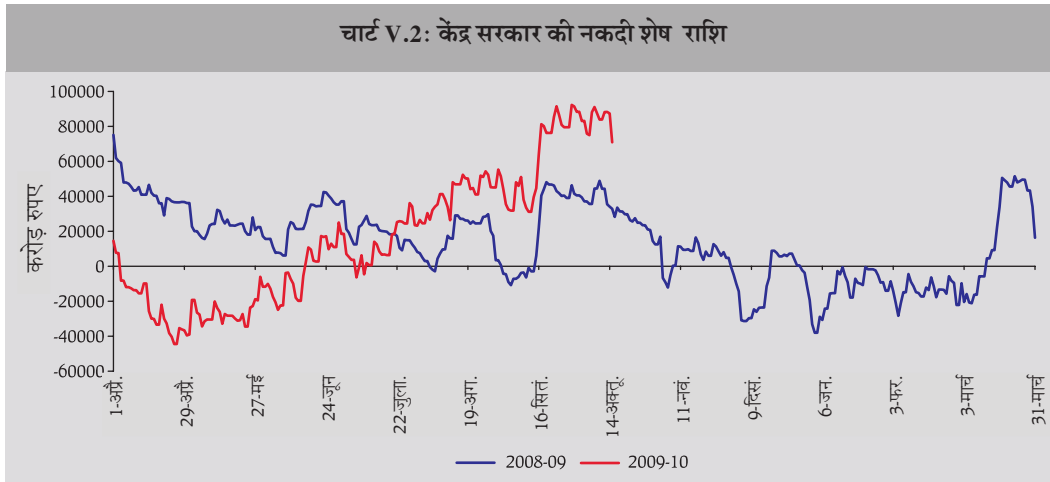
V.9 रिजर्व बैंक ने प्रणाली में प्रचुर चलनिधि बनाये रखने के अपने दृष्टिकोण को वर्ष 2009-10 की दूसरी तिमाही तक आगे बढ़ाया, जो रिजर्व बैंक के पास दैनिक आधार पर रखे गये औसत रिवर्स रिपो शेष के

वर्ष 2009-10 की पहली तिमाही में 1,16,993 करोड़ रुपये की तुलना में बढ़कर दूसरी तिमाही में 1,26,811 करोड़ रुपये हो जाने से स्पष्ट होता है (सारणी 5.2)। वर्ष 2009-10 के पूर्वार्ध में रिजर्व बैंक के पास रखे केंद्र सरकार के नकदी जमाशेष में तीव्र गिरावट की तुलना में दूसरी तिमाही में अधिक नकदी शेष निर्मित हुआ, जो

मुख्यतः केंद्र सरकार के बाजार उधार और रिजर्व बैंक द्वारा अधिशेष के अंतरण में प्रतिबिंबित होता है (चार्ट V.2)। रिजर्व बैंक ने वर्ष 2009-10 के पूर्वार्ध के लिए खुला बाजार परिचालन (ओएमओ) के अंतर्गत 80,000 करोड़ रुपये राशि की सरकारी प्रतिभूतियों को खरीदने के अपने अभिप्राय की तुलना में नीलामी द्वारा 57,487

सारणी 5.2: देशी वित्तीय बाजार - एक नजर में

वर्ष/ माह	मांग मुद्रा		सरकारी प्रतिभूतियाँ		विदेशी मुद्रा			चलनिधि प्रबंधन		इक्विटी			
	औसत दैनिक पण्यवर्त (करोड़ रुपए)	औसत मांग दर* (प्रतिशत)	सरकारी प्रतिभूतियों में औसत पण्यवर्त (करोड़ रुपए)+	औसत 10 वर्षीय प्रतिलाभ @ (प्रतिशत)	औसत दैनिक अंतर बैंक पण्यवर्त (मिलियन अमरीकी डॉ.)	औसत विनिमय दर (रु. प्रति अमरीकी डॉ.)	रिजर्व बैंक की निवल विदेशी मुद्रा बिक्री (-)/ खरीद (+) (मिलियन अमरीकी डॉ.)	औसत एमएसएस बकाया# (करोड़ रुपए)	औसत दैनिक रिबर्स रियो (एलएएफ) बकाया (करोड़ रुपए)	बीएसई में औसत पण्यवर्त (करोड़ रुपए)	एनएसई में औसत पण्यवर्त (करोड़ रुपए)	औसत बीएसई सेसेक्स**	औसत एस एण्डपी सोएनएक्स निफ्टी**
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
2006-07	21,725	7.22	4,863	7.78	18,540	45.28	26,824 ^	37,698	21,973	3,866	7,812	12277	3572
2007-08	21,393	6.07	8,104	7.91	34,044	40.24	78,203 ^	1,28,684	4,677	6,275	14,148	16569	4897
2008-09	22436	7.06	10,879	7.54	34,712	45.92	-2,910 ^	1,48,889	2,885	4,498	11,272	12303	3713
2008													
अप्रै.	19,516	6.11	6,657	8.10	37,580	40.02	4,325	1,70,726	26,359	5,773	13,561	16291	4902
मई	19,481	6.62	8,780	8.04	32,287	42.13	148	1,75,565	11,841	6,084	13,896	16946	5029
जून	21,707	7.75	6,835	8.43	38,330	42.82	-5,229	1,74,433	-8,622	5,410	12,592	14997	4464
जुला.	24,736	8.76	5,474	9.18	37,173	42.84	-6,320	1,72,169	-27,961	5,388	12,862	13716	4125
अग.	23,408	9.1	7,498	9.06	38,388	42.94	1,210	1,71,944	-22,560	4,996	11,713	14722	4417
सितं.	23,379	10.52	10,418	8.45	44,700	45.56	-3,784	1,75,666	-42,591	5,147	12,489	13943	4207
अक्टू.	28,995	9.9	8,641	7.85	36,999	48.66	-18,666	1,69,123	-45,612	3,911	10,810	10550	3210
नव.	21,812	7.57	11,732	7.41	31,322	49.00	-3,101	1,47,648	-8,017	3,539	9,618	9454	2835
दिसं.	21,641	5.92	22,903	5.88	34,874	48.63	-318	1,24,848	22,294	3,851	10,141	9514	2896
2009													
जन.	18,496	4.18	19,136	5.84	27,895	48.83	-29	1,13,535	45,474	3,526	9,559	9350	2854
फर.	22,241	4.16	11,831	5.98	25,068	49.26	230	1,02,934	50,649	2,859	7,887	9188	2819
मार्च	23,818	4.17	10,644	6.59	33,126	51.23	-3,388	88,077	33,360	3,489	10,140	8966	2802
अप्रै.	21,820	3.28	15,997	6.55	27,796	50.06	-2,487	75,146	1,01,561	5,232	15,688	10911	3360
मई	19,037	3.17	14,585	6.41	32,227	48.53	-1,437	45,955	1,25,728	6,427	19,128	13046	3958
जून	17,921	3.21	14,575	6.83	32,431	47.77	1,044	27,140	1,23,400	7,236	21,928	14782	4436
जुला.	14,394	3.21	17,739	7.01	30,396	48.48	-55	22,159	1,30,891	6,043	18,528	14635	4343
अग.	15,137	3.22	9,699	7.18	27,284	48.34	181	19,804	1,28,275	5,825	17,379	15415	4571
सितं.	16,118	3.31	16,988	7.26	27,574	48.41	-	18,773	1,21,548	6,211	18,253	16338	4859
*	: दैनिक भारत मांग मुद्रा उधार दरों का औसत					+	: केंद्र सरकार की दिनांकित प्रतिभूतियों में दैनिक पूर्ण पण्यवर्त का औसत						
@	: दैनिक अंतिम दरों का औसत					#	: एमएसएस के साप्ताहिक बकाए का औसत						
**	: दैनिक अंतिम सूचकांकों का औसत					^	: वित्तीय वर्ष के लिए संचयी						
एलएएफ	: चलनिधि समायोजन सुविधा					एमएसएस	: बाजार स्थिरीकरण योजना			: बीएसई : बंबई शेयर बाजार लि.			
एनएसई	: नेशनल स्टॉक एक्सचेंज ऑफ इंडिया लि.					-	: उपलब्ध नहीं						
टिप्पणी	: स्तंभ 10 में (-) चलनिधि अंतर्वेशन को तथा (+) चलनिधि अवशोषण को सूचित करता है।												



करोड़ रुपये की राशि की प्रतिभूतियों की खरीद अंत-सितंबर 2009 तक की।

सरकार का नकदी प्रबंधन

V.10 वर्ष 2009-10 की पहली तिमाही के दौरान केंद्र सरकार ने अनेक अवसरों पर अर्थोपाय अग्रिमों (डब्ल्यूएमए) और ओवरड्राफ्टों (ओडी) का आश्रय लिया (सारणी 5.3)। तिमाही अग्रिम कर अंतर्वाह के कारण 16 जून 2009 को नकदी शेष धनात्मक हो गये और लगभग वर्ष 2009-10 की दूसरी तिमाही के दौरान धनात्मक बने रहे। अधिशेष नकदी शेष, जो अंत-जून में 18,527 करोड़ रुपये था, वह बढ़ कर अंत सितंबर में 91,410 करोड़

रुपये हो गया, जो कर-राजस्व (प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष) की वसूली में सुधार, रिजर्व बैंक से अधिशेष के अंतरण में बढ़ोतरी और बाजार उधार की बढ़ी हुई प्रमात्रा के कारण हुआ। अधिशेष नकदी शेष 20 अक्टूबर 2009 की स्थिति के अनुसार कम होकर 69,554 करोड़ रुपये रह गया।

चलनिधि प्रबंधन

V.11 चलनिधि की स्थिति एलएएफ के अंतर्गत औसत दैनिक अवशोषण उच्च स्तर पर बने रहने के साथ वर्ष 2009 की दूसरी तिमाही में और सहज हो गयी। तथापि, एलएएफ के अंतर्गत दैनिक अवशोषण, जो 4 सितंबर 2009 को सर्वोच्च स्तर पर था, सितंबर 2009 के दूसरे पखवाड़े में कुछ नरम हुआ, जो अग्रिम कर अदायगी के कारण महत्वपूर्ण बहिर्गमन को प्रतिबिंबित करता है (सारणी 5.4)। दूसरी तिमाही में बैंकिंग प्रणाली में चलनिधि की स्थिति के सहज होने, बावजूद इसके कि केंद्र सरकार के नकदी शेष में वृद्धि हुई थी, ने मुख्यतः एमएसएस के समेट लिए जाने (4,500 करोड़ रुपये) और ओएमओ नीलामी आधारित खरीद (29,298 करोड़ रुपये) को प्रतिबिंबित किया। वर्ष 2009-10 के दौरान (सितंबर 2009 तक) एमएसएस को समेट लिए जाने के कारण

सारणी 5.3: केंद्र सरकार का नकदी प्रबंधन				
	2007-08	2008-09	सितंबर के अंत तक	
			2008-09	2009-10
1	2	3	4	5
दिनों की संख्या				
अर्थोपाय अग्रिम @	91	109	16	76
ओडी	37	65	-	44
नकदी में कमी	91	109	16	76
औसत उपयोग (करोड़ रुपये)				
अर्थोपाय अग्रिम	3,605	2,077	371	6,194
ओडी	645	1,823	-	2,309

@ : ओडी के दिनों की संख्या शामिल है।

सारणी 5.4: चलनिधि स्थिति

(करोड़ रुपए)

अंतिम शुक्रवार को बकाया	एलएएफ	एमएसएस	भारिबैं में केंद्र का अधि- शेष @	कुल (2 से 4)	अंतिम शुक्रवार को बकाया	एलएएफ	एमएसएस	भारिबैं में केंद्र का अधि- शेष @	कुल (2 से 4)
1	2	3	4	5	1	6	7	8	9
2008					2009				
जनवरी	985	1,66,739	70,657	2,38,381	जनवरी	54,605	1,08,764	-9,166	1,54,203
फरवरी	8,085	1,75,089	68,538	2,51,712	फरवरी	59,820	1,01,991	-9,603	1,52,208
मार्च*	-50,350	1,68,392	76,586	1,94,628	मार्च*	1,485	88,077	16,219	1,05,781
अप्रैल	32,765	1,72,444	36,549	2,41,758	अप्रैल	1,08,430	70,216	-40,412	1,38,234
मई	-9,600	1,75,362	17,102	1,82,864	मई	1,10,685	39,890	-6,114	1,44,461
जून	-32,090	1,74,433	36,513	1,78,856	जून	1,31,505	22,890	12,837	1,67,232
जुलाई	-43,260	1,71,327	15,043	1,43,110	जुलाई	1,39,690	21,063	26,440	1,87,193
अगस्त	-7,600	1,73,658	17,393	1,83,451	अगस्त	1,53,795	18,773	45,127	2,17,695
सितंबर	-56,480	1,73,804	40,358	1,57,682	सितंबर	1,06,115	18,773	80,775	2,05,663
अक्टूबर	-73,590	1,65,187	14,383	1,05,980	अक्टूबर 16	76,260	18,773	61,343	1,56,376
नवंबर	-9,880	1,32,531	7,981	1,30,632					
दिसंबर	14,630	1,20,050	3,804	1,38,484					

@ : अधिशेष के मामले में रिजर्व बैंक में स्थित न्यूनतम नकदी शेष को छोड़कर ।

* : आंकड़े 31 मार्च के हैं।

टिप्पणी : 1. स्तंभ 2 में ऋणात्मक चिन्ह एलएएफ के माध्यम से चलनिधि अंतर्वेशन दर्शाता है।

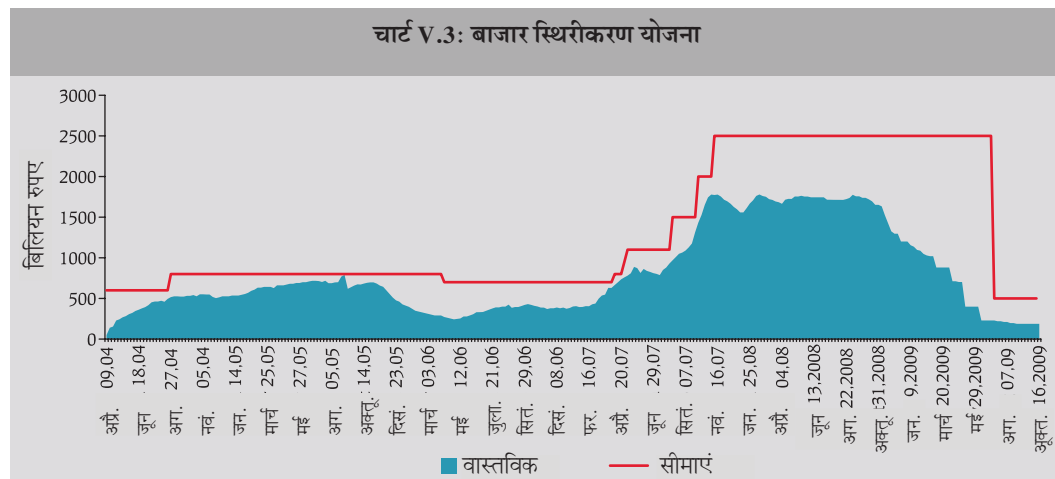
2. 17 सितंबर 2008 से 5 मई 2009 तक दैनिक आधार पर संचालित किए जा रहे दूसरे एलएएफ को 8 मई 2009 से रिपोर्ट करने के लिए नियत शुक्रवार को ही संचालित किया जा रहा है।

3. स्तंभ 4 में ऋणात्मक चिन्ह अर्धोपाय अग्रिम / ओवरड्राफ्ट के माध्यम से चलनिधि अंतर्वेशन को दर्शाता है।

प्राप्त 70,000 करोड़ रुपये (28,000 करोड़ रुपये की जल्दी समाप्त करना) का उपयोग चलनिधि प्रबंधन के प्रमुख साधन के रूप में किया गया (चार्ट V.3)।

V.12 बैंकिंग प्रणाली की रुपया चलनिधि की महत्वपूर्ण रूप से कम हो गयी आवश्यकताएँ इस तथ्य से स्पष्ट थी कि विशेष मीयादी रिपो सुविधा का उपयोग लगातार

चार्ट V.3: बाजार स्थिरीकरण योजना



17 अगस्त 2009 से नहीं किया जा रहा है। प्रचुर चलनिधि की स्थिति को देखते हुए मीयादी रिपो की नीलामी, जो 14 अक्टूबर 2008 से दैनिक आधार पर की जा रही थी, अब 27 अप्रैल 2009 से साप्ताहिक आधार पर की जा रही है। इसके अतिरिक्त, विदेशी मुद्रा स्वैप सुविधा, जिसे उन भारतीय बैंकों को विदेशी मुद्रा चलनिधि प्रदान करने के लिए संस्थित किया गया था, जिनकी विदेश में शाखाएँ या सहायक संस्थाएँ हों, के अंतर्गत बकाया भी अंत-जून 2009 के 595 करोड़ रुपये से घट कर अंत-सितंबर 2009 में 240 करोड़ रुपये रह गयी। मीयादी रिपो और विदेशी मुद्रा स्वैप सुविधा की अवधि, जिसे समय-समय पर बढ़ाया जाता रहा है, अंत-मार्च 2010 तक है। केंद्र का अधिशेष नकदी शेष वर्ष 2009-10 की दूसरी तिमाही में चलनिधि स्थिति के प्रेरक के रूप में उभरा (सारणी 5.5)।

मुद्रा बाजार

V.13 मुद्रा बाजार वर्ष 2009-10 की दूसरी तिमाही के दौरान सुव्यवस्थित बना रहा। अधिशेष चलनिधि को प्रतिबिंबित करते हुए माँग-दर वर्ष 2009-10 की दूसरी तिमाही में अनौपचारिक एलएएफ कोरीडोर की निचली सीमा के चतुर्दिक मँडराती रही (चार्ट V.4)। औसत माँग दर दूसरी तिमाही में 3.25 प्रतिशत थी, जो पहली तिमाही के 3.22 प्रतिशत की तुलना में सीमांतिक रूप से ऊँची थी।

V.14 मुद्रा बाजार के संपार्श्विक खंड में ब्याज दरें - बाजार रिपो (एलएएफ के बाहर) तथा संपार्श्विक उधार और ऋणदायी बाध्यता (सीबीएलओ) - दूसरी तिमाही के दौरान माँग दर के आगे-पीछे डोलती रही, लेकिन माँग दर से नीचे बनी रही (चार्ट V.5)। मुद्रा बाजार के संपार्श्विक खंड में भारत औसत ब्याज

सारणी 5.5: रिज़र्व बैंक के चलनिधि प्रबंधन कार्य

मद	(करोड़ रुपए)							
	2008-09 अप्रै.-मार्च	2008-09				2009-10		
		ति.1	ति.2	ति.3	ति.4	ति.1	जुलाई	अगस्त
1	2	3	4	5	6	7	8	9
क. चलनिधि के प्रेरक कारक (1+2+3+4)	-1,67,708	6,061	-18,851	-1,01,278	-53,640	-44,599	1,237	-57
1. प्राधिकृत व्यापारियों से भारिबैं का निवल क्रय	-1,78,592	-8,555	-40,249	-1,12,168	-17,620	-15,874	1,665	-176
2. जनता के पास मुद्रा	-97,921	-30,063	12,360	-40,070	-40,147	-18,178	8,219	-3,197
3. क. रिज़र्व बैंक में केंद्र का नकदी अधिशेष	60,367	40,073	-3,845	36,554	-12,415	3,382	-13,603	-18,686
3. ख. अर्थोपाय अग्रिम और ओवरड्राफ्ट	0	0	0	0	0	0	0	0
4. अन्य (अवशिष्ट)	48,438	4,606	12,884	14,406	16,542	-13,929	4,956	22,003
ख. चलनिधि प्रबंधन (5+6+7+8)	2,35,209	-37,659	7,217	1,33,325	1,32,326	-21,674	-317	492
5. एलएएफ रिपो का चलनिधि प्रभाव	-51,835	-18,260	24,390	-71,110	13,145	-1,30,020	-8,185	-14,105
6. ओएमओ (निवल) का चलनिधि प्रभाव *	104,480	14,642	11,949	10,681	67,208	43,159	6,040	12,307
7. एमएसएस का चलनिधि प्रभाव	80,314	-6,041	628	53,754	31,973	65,187	1,827	2,290
8. सीआरआर परिवर्तन का चलनिधि पर पहले चक्र का प्रभाव	1,02,250	-28,000	-29,750	1,40,000	20,000	-	-	-
ग. बैंक का रिज़र्व# (क+ख)	67,501	-31,598	-11,634	32,047	78,686	-66,273	920	435

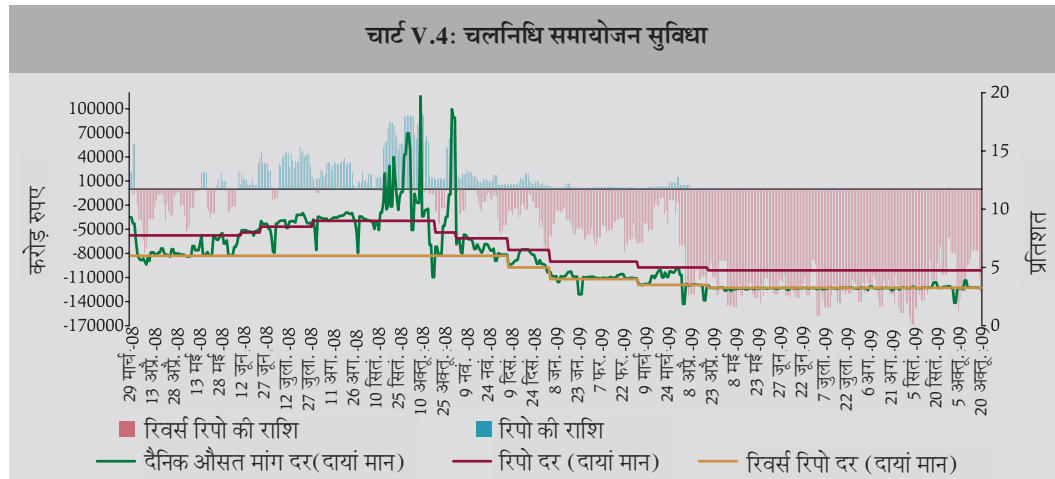
(+): बैंकिंग प्रणाली में चलनिधि अंतर्वेशन सूचित करता है।

(-): बैंकिंग प्रणाली से चलनिधि का अवशोषण सूचित करता है।

* : तेज बांड शामिल हैं परंतु राज्य सरकार की ओर से खरीदी गई सरकारी प्रतिभूतियां शामिल नहीं हैं।

: बैंकों की वॉल्ट नकदी शामिल है तथा सीआरआर में परिवर्तन के कारण पहले चक्र का चलनिधि प्रभाव समायोजित।

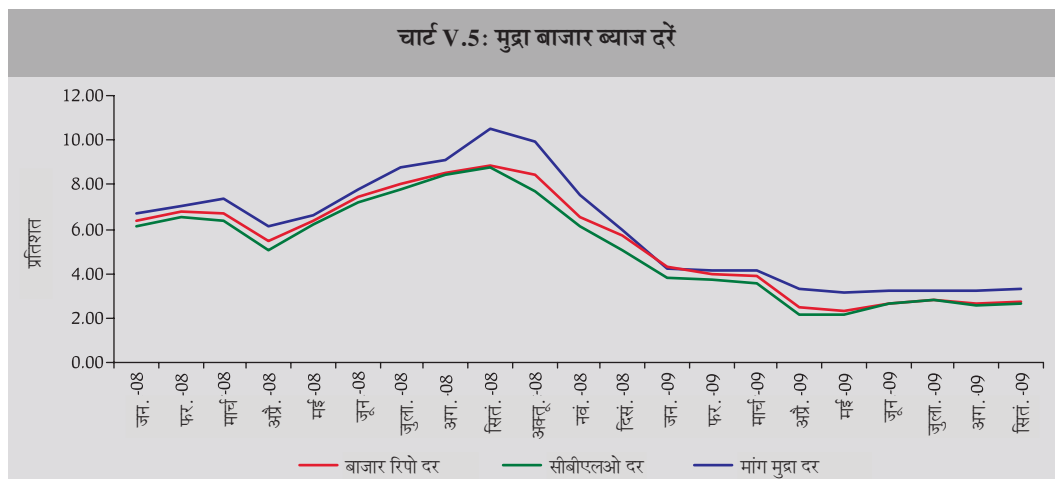
टिप्पणी : मार्च के आंकड़े 31 मार्च के हैं और अन्य सभी महीनों के आंकड़े अंतिम शुक्रवार के हैं।



दर वर्ष 2009-10 की दूसरी तिमाही में पहली तिमाही के 2.4 प्रतिशत की तुलना में सीमांतिक रूप से बढ़ कर 2.7 प्रतिशत हो गयी। सीबीएलओ और बाजार रिपो खंडों में लेनदेन का परिमाण वर्ष 2009-10 की दूसरी तिमाही में उच्च स्तर पर बना रहा, जो सहज चलनिधि और सक्रिय बाजार स्थिति को प्रतिबिंबित करता है (सारणी 5.6)। समूह के रूप में बैंक संपार्श्विकृत खंड में प्रमुख उधारकर्ता होते हैं, जबकि म्यूच्युअल फंड (एमएफ) उस खंड में अकेले सबसे बड़े उधारदाता बने रहते हैं। वास्तव में, संपार्श्विकृत

खंड में दूसरी तिमाही में 75 प्रतिशत उधार एमएफ द्वारा दिया गया, जो उनकी उधार देने की निरंतर बड़ी हुई क्षमता को प्रतिबिंबित करता है। संपार्श्विकृत बाजार मुद्रा बाजार का प्रमुख खंड बना रहा, जो मुद्रा बाजार में दूसरी तिमाही में कुल परिमाण के 80 प्रतिशत के लिए जिम्मेवार है।

V.15 एमएफ और बैंकों के बीच निधियों की आवाजाही में वर्तुलाकृति रही है। बैंक अपने संसाधनों का एक हिस्सा एमएफ में निवेश करते हैं। एमएफ भी अपनी निधियाँ बैंकों को सीबीएलओ और बाजार रिपो



सारणी 5.6 : मुद्रा बाजार खंडों की गतिविधियाँ

वर्ष / माह	औसत दैनिक मात्रा (एक चरण)						वाणिज्यिक पत्र		जमा प्रमाणपत्र	
	मांग	बाजार रिपो	सीबीएलओ	कुल (2+3+4)	मुद्रा बाजार दर* (प्रतिशत)	मीयादी मुद्रा बाजार	बकाया राशि	डब्ल्यूएडी आर (प्रतिशत)	बकाया राशि	डब्ल्यूएडी आर (प्रतिशत)
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11
2008-09										
अप्रैल	9.758	14.966	38.828	63.552	5.31	374	37,584	8.85	1,50,865	8.49
मई	9.740	14.729	36,326	60,795	6.29	420	42,032	9.02	1,56,780	8.95
जून	10.854	11.262	35,774	57,890	7.35	253	46,847	10.03	1,63,143	9.16
जुलाई	12,368	8,591	23,669	44,628	8.09	226	51,569	10.95	1,64,892	10.23
अगस्त	11,704	10,454	22,110	44,268	8.65	501	55,036	11.48	1,71,966	10.98
सितंबर	11,690	10,654	20,547	42,891	9.26	335	52,038	12.28	1,75,522	11.56
अक्टूबर	14,497	9,591	16,818	40,906	8.66	345	48,442	14.17	1,58,562	10.00
नवंबर	10,906	15,191	24,379	50,476	6.58	319	44,487	12.42	1,51,493	10.36
दिसंबर	10,820	16,943	32,261	60,024	5.37	415	40,391	10.70	1,51,214	8.85
जनवरी	9,248	18,053	31,794	59,095	3.99	454	51,668	9.48	1,64,979	7.33
फरवरी	11,121	19,929	38,484	69,534	3.89	669	52,560	8.93	1,75,057	6.73
मार्च	11,909	21,593	48,319	81,821	3.76	451	44,171	9.79	1,92,867	7.53
2009-10										
अप्रैल	10,910	20,545	43,958	75,413	2.41	332	52,881	6.29	2,10,954	6.48
मई	9,518	22,449	48,505	80,472	2.34	338	60,740	5.75	2,18,437	6.20
जून	8,960	21,694	53,553	84,207	2.69	335	68,721	5.00	2,21,491	4.90
जुलाई	7,197	20,254	46,501	73,952	2.83	389	79,582	4.71	2,40,395	4.96
अगस्त	7,569	23,305	57,099	87,973	2.62	461	83,026	5.05	2,32,522	4.91
सितंबर	8,059	27,978	62,388	98,425	2.73	381	88,161 +	4.96 +	-	-

* : मांग, बाजार रिपो और सीबीएलओ की भारत औसत दर। + : 15 सितंबर 2009 को डब्ल्यूएडीआर : भारत औसत बट्टा दर

के माध्यम से उधार देते हैं। उदाहरण के लिए, वर्ष 2009-10 की दूसरी तिमाही में एमएफ में बैंकों के निवेश के लगभग 50 प्रतिशत से ऊपर की राशि बदले में एमएफ द्वारा बैंकों को संपार्श्विकृत खंड में उधार दी गयी (सारणी 5.7)।

जमा प्रमाणपत्र

V.16 चलनिधि स्थिति के सुविधाजनक होने से जमा प्रमाणपत्र (सीडी) के पाक्षिक औसत निर्गम में वर्ष 2009-10 में अब तक तेजी आयी है। जारी किये गये अधिकतर सीडी छह महीनों से अधिक अवधि के थे।

सीडी पर औसत ब्याज दर, प्रचुर चलनिधि की पृष्ठभूमि में अंत-मार्च 2009 और मध्य जून 2009 के बीच कम हुई, लेकिन उसके बाद उसमें थोड़ी बढ़ोतरी हुई है (सारणी 5.6)।

वाणिज्यिक पत्र

V.17 वर्ष 2009-10 के दौरान वाणिज्यिक पत्र (सीपी) बाजार में भी चलनिधि स्थिति के सहज होने से तेजी आयी है और पाक्षिक निर्गम का आकार महत्वपूर्ण रूप से बढ़ा है। अंत-अगस्त 2009 में पट्टादायी और वित्त कंपनियों सीपी की प्रमुख जारीकर्ता रही हैं (45 प्रतिशत), जिसके

सारणी 5.7: बैंकों और म्यूच्युअल फंडों के बीच निधियों का आवागमन

(करोड़ रुपए)					
रिपोर्ट करने के लिए नियत शुरुवार	म्यूच्युअल फंडों की उधारियाँ		म्यूच्युअल फंडों में बैंकों के निवेश का शेष	संपार्श्वीकृत खंड में म्यूच्युअल फंडों की उधारियाँ, म्यूच्युअल फंडों में बैंकों के निवेश के प्रतिशत के रूप में	
	सीबीएलओ	बाजार रिपो		सीबीएलओ	बाजार रिपो
1	2	3	4	5	6
03-जुला.-09	28,320	28,846	89,472	32	32
17-जुला.-09	34,851	33,984	1,29,998	27	26
31-जुला.-09	42,485	26,724	1,39,619	30	19
14-अग.-09	55,540	43,203	1,56,910	35	28
28-अग.-09	58,725	33,596	1,51,136	39	22
11-सितं.-09	59,899	46,754	1,56,573	38	30
25-सितं.-09	29,504	29,328	66,687	44	44

बाद 'विनिर्माण और अन्य कंपनियाँ' (41 प्रतिशत) और वित्तीय संस्थाओं (14 प्रतिशत) का स्थान आता है। कुल बकाया सीपी में 'विनिर्माण और अन्य कंपनियों' तथा 'वित्तीय संस्थाओं' का हिस्सा हाल की अवधि में बढ़ा है (सारणी 5.8)।

V.18 वाणिज्यिक पत्र बाजार में जोखिम में महत्वपूर्ण कमी 91-दिवसीय खजाना बिल की तुलना में सीपी के स्प्रेड में निरंतर गिरावट होने से स्पष्ट थी, जो अक्टूबर 2008 में 604 आधार अंक के सर्वोच्च स्तर पर था और निरंतर घटते हुए सितंबर 2009 में 161 आधार अंक हो गया (चार्ट V.6)। वर्ष 2009-10 के दौरान अभी

तक सीपी के निर्गम के लिए सर्वाधिक पसंदीदा अवधि 60-180 दिन रही है, जबकि पिछले वर्ष 180 दिनों से अधिक के लिए रही थी।

खजाना बिल

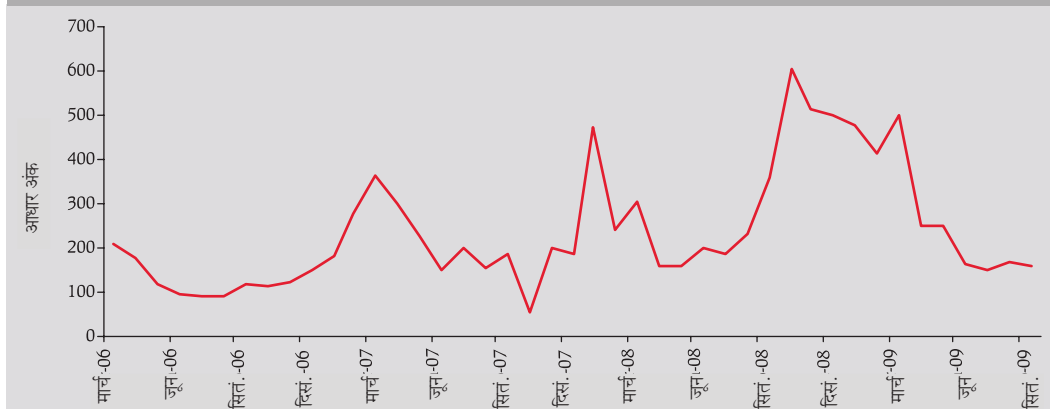
V.19 खजाना बिलों के माध्यम से जुटायी गयी कुल राशि 2,23,210 करोड़ रुपये पर वर्ष 2009-10 के दौरान (23 अक्टूबर 2009 तक) पिछले वर्ष की इसी अवधि की तुलना में काफी अधिक रही, जो अंशतः सरकार की उच्चतर चलनिधि जरूरतों को प्रतिबिंबित करती है। 16 जुलाई 2009 को यह निर्णय लिया गया कि खजाना बिलों की

सारणी 5.8: वाणिज्यिक पत्र - प्रमुख जारीकर्ता

(करोड़ रुपए)						
जारीकर्ता का संवर्ग	निम्नलिखित के अंत में					
	जून-08	सितं-08	दिसं-08	मार्च-09	जून-09	अग-09
1	2	3	4	5	6	7
पट्टेदारी तथा वित्तपोषण	34,957 (74.6)	39,123 (75.0)	27,965 (73.5)	27,183 (61.5)	34,437 (50.1)	36,926 (44.5)
विनिर्माण	8,150 (17.4)	9925 (19.10)	6,833 (18.0)	12,738 (28.9)	23,454 (34.1)	33,985 (40.9)
वित्तीय संस्थाएं	3,740 (8.0)	3,060 (5.9)	3,257 (8.5)	4,250 (9.6)	10,830 (15.8)	12,115 (14.6)
कुल	46,847	52,108	38,055	44,171	68,721	83,026

टिप्पणी : कोष्ठक में दिए गए आंकड़े कुल बकाया में प्रतिशत हिस्सा हैं।

चार्ट V.6: 91 दिवसीय खजाना बिलों की तुलना में सीपी का स्प्रेड



परिपक्व होने वाली राशियों को 30 सितंबर 2009 तक खजाना बिलों की निहित आय में हाल के महीनों में कुछ रोलओवर किया जाये। 182-दिवसीय और 364-दिवसीय बढोतरी हुई है (सारणी 5.9)।

सारणी 5.9: प्राथमिक बाजार में खजाना बिल

वर्ष/माह	अधिसूचित राशि (करोड़ रु.)	न्यूनतम कट-ऑफ मूल्य पर औसत निहित प्रतिफल (प्रतिशत)			औसत बिड - कवर अनुपात		
		91-दिवसीय	182-दिवसीय	364-दिवसीय	91-दिवसीय	182-दिवसीय	364-दिवसीय
1	2	3	4	5	6	7	8
2007-08	2,24,500 @	7.10	7.40	7.42	2.84	2.79	3.21
2008-09	2,99,000 @	7.10	7.22	7.15	3.43	2.91	3.47
अप्रैल 2008	22,000	7.28	7.41	7.53	1.70	1.36	2.36
मई 2008	21,000	7.41	7.55	7.61	2.65	2.78	3.05
जून 2008	11,500	8.01	8.42	7.93	2.00	2.76	2.80
जुलाई 2008	16,000	9.07	9.33	9.39	2.35	2.72	2.70
अगस्त 2008	23,500	9.15	9.31	9.24	2.99	2.86	4.35
सितंबर 2008	25,000	8.69	8.92	8.83	3.06	3.04	3.57
अक्तूबर 2008	35,000	8.13	8.36	7.92	1.95	2.42	4.00
नवंबर 2008	28,000	7.30	7.13	7.23	7.95	2.97	4.33
दिसंबर 2008	16,500	5.69	5.35	5.07	5.36	4.67	5.14
जनवरी 2009	38,500	4.69	4.60	4.64	4.56	3.22	4.80
फरवरी 2009	32,000	4.78	4.71	4.62	2.81	1.86	2.62
मार्च 2009	30,000	4.77	4.86	5.25	2.10	2.67	1.44
2009-10							
अप्रैल 2009	39,000	3.81	4.11	4.07	3.22	2.79	5.07
मई 2009	29,000	3.26	3.54	3.58	3.18	2.25	3.14
जून 2009	22,500	3.35	3.56	3.99	3.37	5.65	2.86
जुलाई 2009	40,000	3.23	3.45	3.77	3.92	2.86	3.90
अगस्त 2009	28,000	3.35	3.84	4.25	3.04	2.18	3.76
सितंबर 2009	32,000	3.35	3.94	4.47	3.67	4.17	4.05

@: विनीय वर्ष का जोड़।

टिप्पणी : 1. अप्रैल 2005 में 182 दिवसीय खजाना बिल पुनः शुरू किया गया।
2. अधिसूचित राशि में बाजार स्थिरीकरण योजना (एमएसएस) के निर्गम शामिल हैं।

सरकारी प्रतिभूति बाजार

केंद्र सरकार प्रतिभूतियाँ

V.20 केंद्र सरकार ने बजट निर्धारित सकल बाजार उधार कार्यक्रम का एक बड़ा भाग (74.0 प्रतिशत)(एमएसएस शेषों को मुक्त करके जुटायी गयी राशियों सहित) वर्ष 2009-10 के दौरान (23 अक्टूबर 2009 तक) पूरा कर लिया। प्रणाली में प्रचुर चलनिधि होने से उधार लेने में सुविधा हुई, हालाँकि ब्याज दरों पर कुछ प्रभाव पड़ा, जो उच्चतर राजकोषीय घाटे के वित्तपोषण से उत्पन्न हुआ था (सारणी 5.10)।

राज्य सरकार प्रतिभूतियाँ

V.21 वार्षिक नीति वक्तव्य में वर्ष 2009-10 के लिए राज्यों के लिए निवल बाजार उधार 1,26,000 करोड़ रुपये अनुमानित था, जिसे बाद में बढ़ाकर 1,40,000 करोड़ रुपये कर दिया गया। 22 अक्टूबर 2009 तक 21 राज्यों ने 72,216 करोड़ रुपये (निवल 58,683 करोड़ रुपये) जुटाये, जबकि पिछले वर्ष की तदनुकूल अवधि में 12 राज्यों ने 17,896 करोड़ रुपये (निवल 4,438 करोड़

रुपये) जुटाये थे। अधिक उधार लेने के बावजूद राज्य सरकार प्रतिभूतियों पर ब्याज दरें कम हुईं, जो बाजार चलनिधि को प्रतिबिंबित करता है, हालाँकि हाल के महीनों में ब्याज दरों पर कुछ दबाव दिखाई पड़ा है (सारणी 5.10)।

अनुषंगी बाजार

V.22 सभी परिपक्वता स्पेक्ट्रम में प्रतिफल में क्रमिक बढ़ोतरी वर्ष 2009-10 की दूसरी तिमाही के दौरान स्पष्ट प्रतीत हुई। अंत-जून 2009 और अंत-सितंबर 2009 के बीच 1-30 वर्ष की परिपक्वता अवधि के प्रतिफल में बढ़ोतरी 16-70 आधार अंकों के बीच हुई। वित्तीय प्रणाली में प्रचुर चलनिधि रहने के कारण प्रतिफल-वक्र अल्पावधि में दरों में नरमी बताता रहा। तथापि, मध्यावधि से दीर्घावधि प्रतिफल में बड़े राजकोषीय घाटे की चिंता होने के कारण बढ़ोतरी हुई (चार्ट V.7)। सरकारी प्रतिभूति बाजार में कुल कारोबार में चालू राजकोषीय वर्ष में अब तक तेजी के संकेत दिखने आरंभ हो गये हैं (चार्ट V.8)।

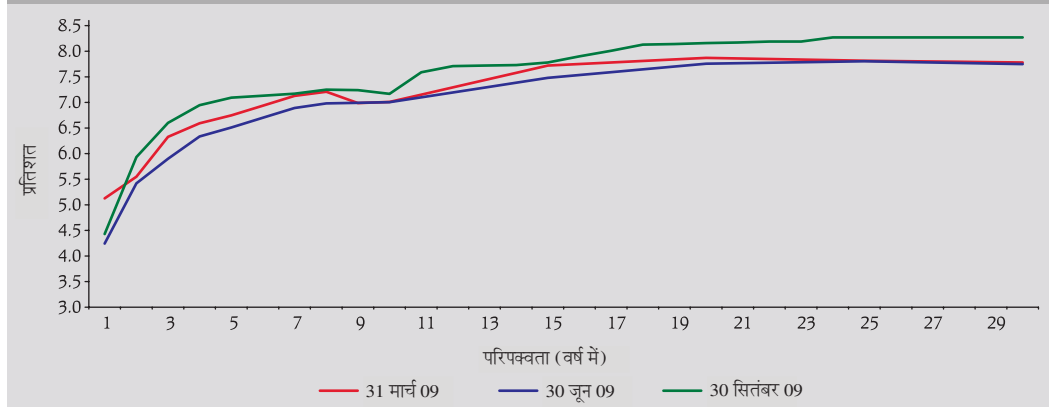
V.23 5-वर्षीय एएए श्रेणी-निर्धारित कंपनी बांडों पर प्रतिफल में वर्ष 2009-10 की दूसरी तिमाही में बढ़ोतरी

सारणी 5.10: केंद्र और राज्य सरकार दिनांकित प्रतिभूतियों के निर्गम

	2007-08	2008-09	2008-09#	2009-10#
1	2	3	4	5
केंद्र सरकार				
उगाही गई सकल राशि (करोड़ रु.)	1,56,000	2,73,000	1,06,000	3,23,000
पुनर्निर्गम	34	52	20	64
नए निर्गम	1	4	1	5
बिड-कवर अनुपात (दायरा)	1.6-4.8	1.7-4.5	1.4-3.5	1.4-3.6
भारत औसत परिपक्वता (वर्ष)	14.9	13.8	15.5	10.9
भारत औसत प्रतिफल (प्रतिशत)	8.12	7.69	8.81	7.08
प्राथमिक व्यापारियों पर भार (करोड़ रुपए)	957	10,773	2,420	6050
राज्य सरकार				
उगाही गई सकल राशि (करोड़ रु.)	67,779	1,18,138	15,884	63,212
कट-ऑफ प्रतिफल	7.84-8.90	5.80-9.90	8.39-9.90	7.04-8.37
भारत औसत प्रतिफल(प्रतिशत)	8.25	7.87	9.05	7.90

: 30 सितंबर तक

चार्ट V.7: सरकारी प्रतिभूतियों का प्रतिफल वक्र



आरंभ हो गयी, जो सरकारी बांडों के प्रतिफल के आगे-पीछे चलता रही। तथापि, कंपनी बांडों पर जोखिम स्प्रेड मोटे तौर पर पूर्व-लीमन स्तर पर आने के लिए संकुचित होता रहा (चार्ट V.9)।

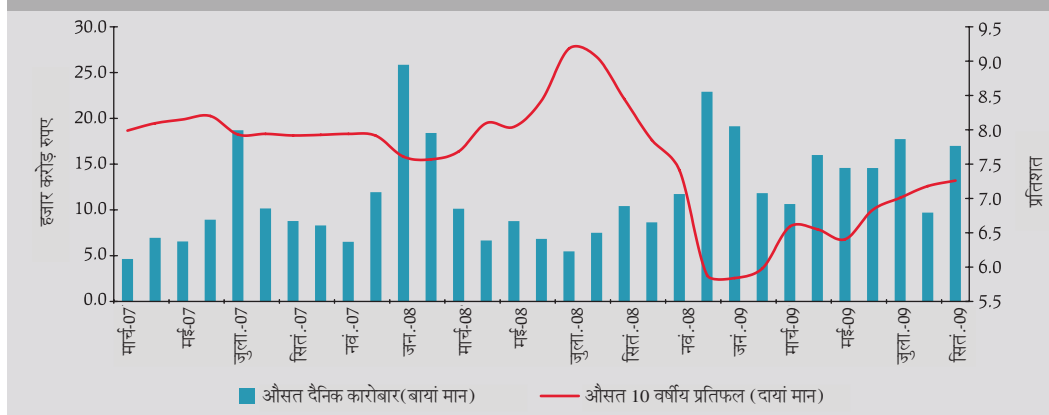
ऋण बाजार

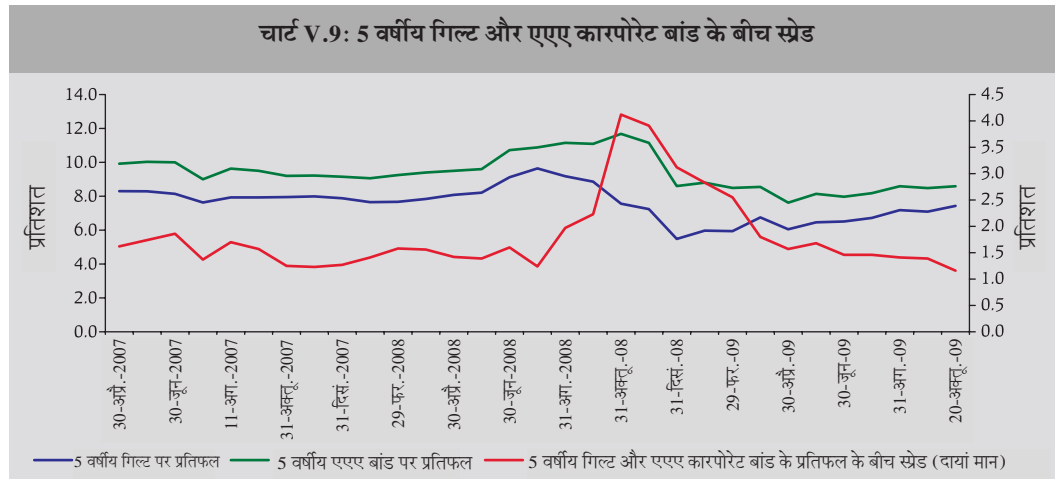
V.24 प्रचलित पर्याप्त बाजार चलनिधि और न्यून नीतिगत ब्याज दर वातावरण के प्रत्युत्तर में एससीबी ने विविध परिपक्वता अवधियों के लिए अपनी जमा दरों को वर्ष

2009-10 की दूसरी तिमाही के दौरान 25-225 आधार अंकों तक कम करना जारी रखा (सारणी 5.11)। बैंकों के लिए निधियों की न्यून लागत का प्रभाव बैंक कर्ज पर ब्याज दरों में संचरित हुआ, जिसमें एससीबी की बेंचमार्क मूल उधार दरों में इसी अवधि के दौरान 25-100 आधार अंकों की कमी आई।

V.25 सरकारी क्षेत्र और निजी क्षेत्र के भारत औसत बीपीएलआर ने सितंबर 2008 के बाद निरंतर गिरावट का प्रदर्शन किया (चार्ट V.10)। सभी एससीबी के लिए

चार्ट V.8: सरकारी प्रतिभूति बाजार में कारोबार





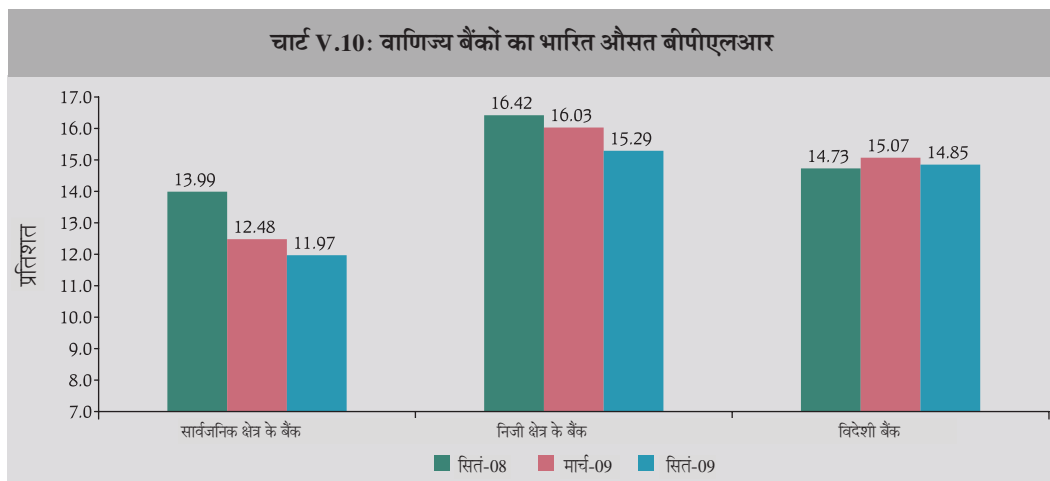
उप-बीपीएलआर उधार दर (निर्यात ऋण और लघु ऋणों को छोड़कर) पर दिए गए कर्ज का हिस्सा मार्च 2008 के 75.8 प्रतिशत से घटकर मार्च 2009 में 66.9 प्रतिशत

रह गया। कुल मिलाकर उधार और जमा दरों में क्रमिक नरमी होती रही, जिसने मौद्रिक नीति के संचरण के सुधार में अपना योगदान किया।

सारणी 5.11: जमा और उधार दरें

(प्रतिशत)					
	मार्च 2007	मार्च 2008	मार्च 2009	जून 2009	अक्टूबर 2009#
1	2	3	4	5	6
1) देशी जमा दर					
सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक					
1 वर्ष तक	2.75-8.75	2.75-8.50	2.75-8.25	1.00-7.00	1.00-6.75
> 1-3 वर्ष	7.25-9.50	8.25-9.25	8.00-9.25	6.50-8.00	6.25-7.50
> 3 वर्ष	7.50-9.50	8.00-9.00	7.50-9.00	7.00-8.50	6.50-8.00
निजी क्षेत्र के बैंक					
1 वर्ष तक	3.00-9.00	2.50-9.25	3.00-8.75	2.00-7.50	2.00-7.00
> 1-3 वर्ष	6.75-9.75	7.25-9.25	7.50-10.25	6.00-8.75	5.25-8.00
> 3 वर्ष	7.75-9.60	7.25-9.75	7.50-9.75	6.00-9.00	5.75-8.25
विदेशी बैंक					
1 वर्ष तक	3.00-9.50	2.25-9.25	2.50-8.50	1.80-8.00	1.25-8.00
> 1-3 वर्ष	3.50-9.50	3.50-9.75	2.50-9.50	2.25-8.50	2.25-8.50
> 3 वर्ष	4.05-9.50	3.60-9.50	2.50-10.00	2.25-9.50	2.25-8.50
2) बीपीएलआर					
1. सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक	12.25-12.75	12.25-13.50	11.50-14.00	11.00-13.50	11.00-13.50
2. निजी क्षेत्र के बैंक	12.00-16.50	13.00-16.50	12.75-16.75	12.50-16.75	12.50-16.75
3. विदेशी बैंक	10.00-15.50	10.00-15.50	10.00-17.00	10.50-16.00	10.50-16.00
3) वास्तविक उधार दर*					
1. सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक	4.00-17.00	4.00-17.75	3.50-18.00	3.50-17.50	—
2. निजी क्षेत्र के बैंक	3.15-25.50	4.00-24.00	4.75-26.00	4.10-26.00	—
3. विदेशी बैंक	5.00-26.50	5.00-28.00	5.00-25.50	2.76-25.50	—

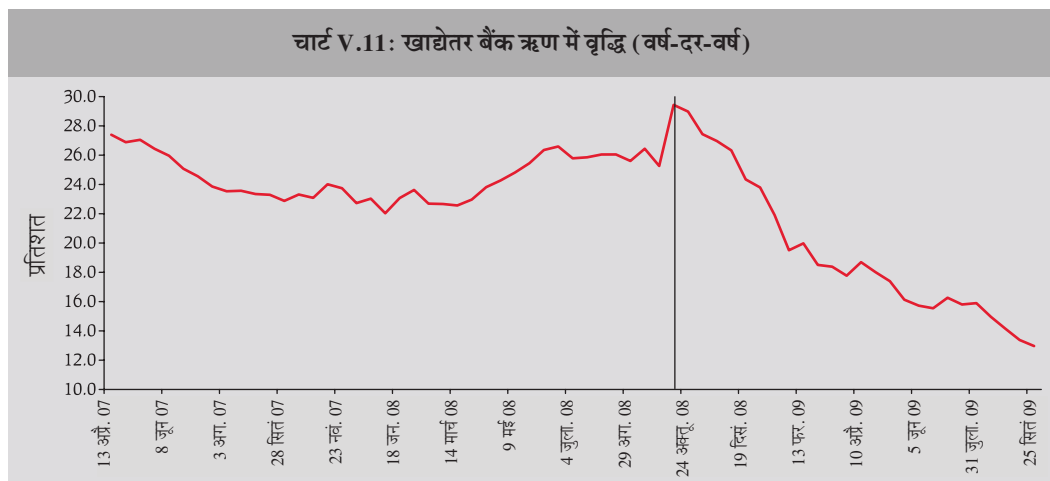
* : 2 लाख रुपए से अधिक के निर्यातित मांग और सावधि ऋण पर ब्याज दर, दोनों छोर की अंतिम 5 प्रतिशत उधार दरों को छोड़कर।
: 15 अक्टूबर 2009 को। —: उपलब्ध नहीं।



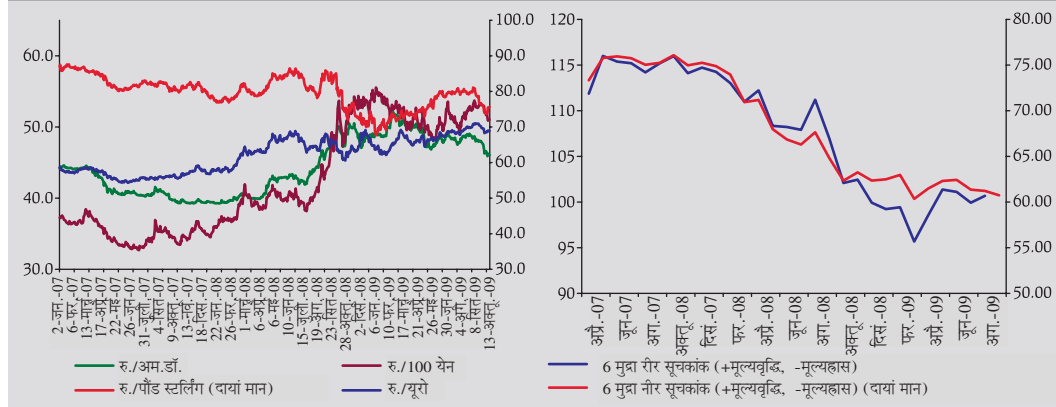
V.26 उधार पर न्यून ब्याज दरों के बावजूद खाद्येतर बैंक ऋण की वृद्धि में वर्ष 2009-10 की दूसरी तिमाही में गिरावट होना जारी रहा (चार्ट V.11)। हालाँकि इसकी व्याख्या गैर बैंकिंग स्रोतों से जुटाये गये संसाधनों में बढ़ोतरी के साथ, खास कर सीपी के निर्गम और इक्विटी बाजार में प्राइवेट प्लेसमेंट के रूप में, की जानी चाहिए। फिर भी, क्रेडिट कार्ड और उपभोक्ता टिकाऊ वस्तुओं से संबंधित ऋण में अब तक ऋणात्मक वृद्धि हुई है, जो उपभोग की वस्तुओं की मांग में निरंतर कमी की ओर इंगित करता है।

विदेशी मुद्रा बाजार

V.27 वर्ष 2009-10 की पहली तिमाही में मूल्य में वृद्धि की प्रवृत्ति का प्रदर्शन करने के बाद रुपये ने दूसरी तिमाही के दौरान पूँजी अंतर्वाह की वापसी की पृष्ठभूमि में वृहत्तर दुतरफा संचलन का प्रदर्शन किया। वैश्विक आर्थिक संकट के बावजूद भारतीय अर्थव्यवस्था द्वारा प्रदर्शित समुत्थान शक्ति और अंतरराष्ट्रीय बाजार में अमरीकी डॉलर के दुर्बल बने रहने ने भी रुपये की मजबूती में योगदान किया (चार्ट V.12)। अक्टूबर 2009 के दौरान अब तक रुपये



चार्ट V.12: सांकेतिक और वास्तविक विनिमय दरें



में अमरीकी डॉलर के विरुद्ध मजबूती डॉलर के निरंतर अंतर्वाह और यूरो के विरुद्ध अमरीकी डॉलर के कमजोर बने रहने की पृष्ठभूमि में आयी है। 22 अक्टूबर 2009 की स्थिति के अनुसार रुपये के मूल्य में अमरीकी डॉलर के विरुद्ध 9.2 प्रतिशत की और जापानी येन के विरुद्ध 1.7 प्रतिशत की वृद्धि अंत-मार्च 2009 के स्तर से हुई। तथापि, रुपये में पौंड स्टर्लिंग के विरुद्ध 5.9 प्रतिशत और यूरो के विरुद्ध 3.4 प्रतिशत का मूल्यहास हुआ।

V.28 औसत 6-मुद्रा व्यापार आधारित रीर (आधार :1993-94 = 100) में मार्च और अगस्त 2009 के बीच 5.2 प्रतिशत की मूल्यवृद्धि हुई, जिसका मुख्य कारण था अमरीकी डॉलर के विरुद्ध रुपये में मूल्यवृद्धि होना और भारत तथा इसके व्यापारिक भागीदारों के बीच मुद्रास्फीति विभेदक में बढ़ोतरी होना (चार्ट V.12 और सारणी 5.12)। 21 अक्टूबर 2009 को 6-मुद्रा रीर 104.2 पर था। आधार वर्ष के संबंध में दीर्घावधि में रीर में सापेक्ष स्थिरता का प्रदर्शन होता है।

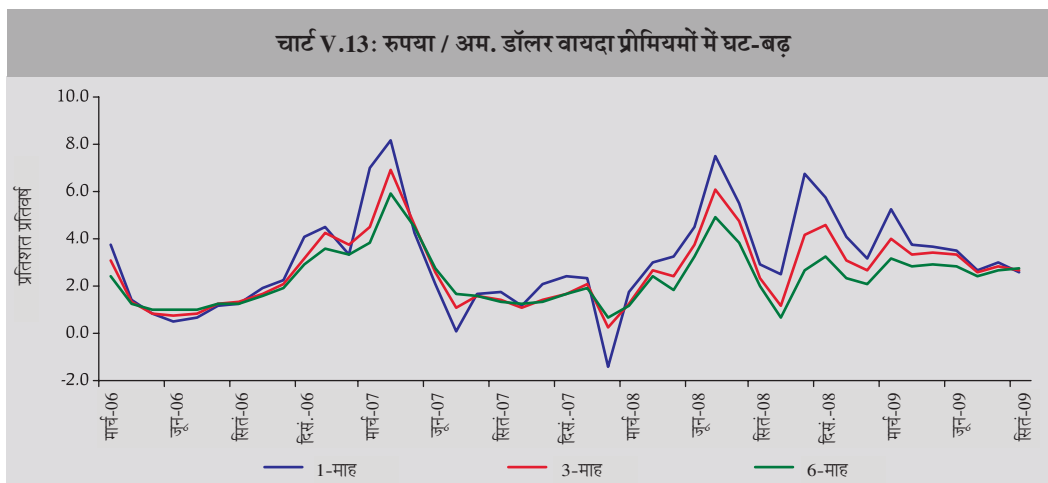
V.29 विदेशी मुद्रा बाजार में आपूर्ति स्थिति सहज होने को प्रतिबिंबित करते हुए, जिसकी अगुआई पूँजी अंतर्वाह ने की, वायदा प्रीमिया में अप्रैल-जुलाई 2009 के दौरान सामान्यतः गिरावट की प्रवृत्ति का प्रदर्शन हुआ। तथापि,

सारणी 5.12: भारतीय रुपये की सांकेतिक और वास्तविक प्रभावी विनिमय दर व्यापार - आधारित भारांक, आधार : 1993-94 (अप्रैल-मार्च) = 100

वर्ष / माह	6-मुद्रा भारांक		36-मुद्रा भारांक	
	नीर	रीर	नीर	रीर
1	2	3	4	5
2007-08	74.76	114.23	93.91	104.81
2008-09(अ)	64.87	104.47	86.15	94.62
सितं. 2008(अ)	64.81	106.96	85.42	95.96
अक्तू. 2008(अ)	62.34	102.09	83.23	92.31
नव. 2008(अ)	63.25	102.45	84.69	92.59
दिसं. 2008(अ)	62.35	99.93	83.91	90.48
जन. 2009(अ)	62.49	99.23	83.62	90.02
फर. 2009(अ)	62.97	99.43	85.20	91.02
मार्च 2009(अ)	60.35	95.68	82.13	88.51
अप्रै. 2009(अ)	61.49	98.58	82.67	89.72
मई 2009(अ)	62.31	101.37	83.41	91.76
जून 2009(अ)	62.43	101.11	83.71	92.19
जुला. 2009(अ)	61.36	99.93	82.33	91.54
अग. 2009(अ)	61.22	100.68	82.02	91.58
प्रतिशत परिवर्तन				
	2007-08	2008-09 (अ)	2008-09 (अप्रैल-अगस्त)	2009-10 (अप्रैल-अगस्त)
36-रीर	6.4	-9.7	-2.2	3.5
36-नीर	9.3	-8.3	-1.6	-0.1
6-रीर	8.2	-8.5	0.2	5.2
6-नीर	7.6	-13.2	-4.7	1.4
रु./अम.डॉ.	12.5	-12.4	-14.8*	6.0*

एनईईआर : सांकेतिक प्रभावी विनिमय दर।
आरईईआर : वास्तविक प्रभावी विनिमय दर।
अ : अनंतिम - : अनुपलब्ध * : सितंबर के अंत तक

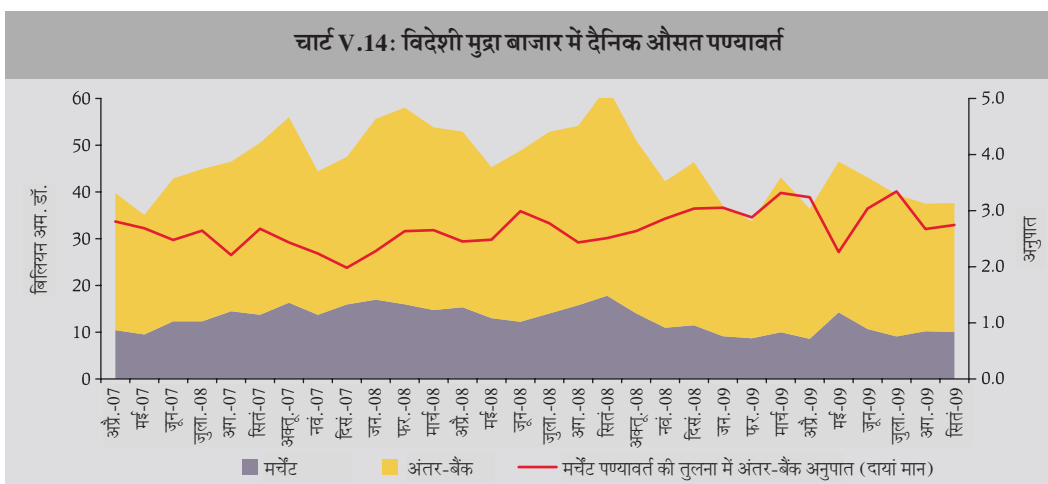
टिप्पणी : 1. 2008-09 से आगे के आंकड़े अनंतिम हैं।
2. सूचकांक में वृद्धि रूप की मजबूती और सूचकांक में कमी रूप में गिरावट को दर्शाती है।



वायदा प्रीमिया में अगस्त 2009 से बढ़ने और घटने, दोनों प्रकार की प्रवृत्ति का प्रदर्शन हुआ, जो अंतर्निहित माँग और आपूर्ति स्थिति को प्रतिबिंबित करता है (चार्ट V.13)। विदेशी मुद्रा बाजार में दैनिक औसत कुल कारोबार, जिसमें मई 2009 में सुधार के कुछ संकेत दिखाई पड़े थे, में जून-सितंबर 2009 की अवधि के दौरान गिरावट दर्ज की गयी। मर्चेट टर्नओवर की तुलना में अंतर-बैंक टर्नओवर का अनुपात बढ़कर अप्रैल-सितंबर 2009 के दौरान 2.9 हो गया, जबकि एक वर्ष पहले यह 2.6 था (चार्ट V.14)।

इक्विटी बाजार

V.30 वर्ष 2009-10 के दौरान अब तक भारतीय पूँजी बाजार ने अधिकांश ईएमई से बेहतर कार्य किया और उस घरेलू धन का अधिकांश भाग पुनः प्राप्त कर लिया, जो वैश्विक वित्तीय संकट के संसर्ग के कारण क्षीण हो चुका था। अनुषंगी बाजार ने घरेलू औद्योगिक कार्यकलाप में तेजी आने के संकेत और विश्व अर्थव्यवस्था में समुत्थान के उभरते संकेतों की पृष्ठभूमि में काफी लाभ दर्ज करना जारी रखा। प्राथमिक



बाजार, जिसमें मई 2009 तक कारोबार में कमी आयी थी, ने भी कार्यकलाप को पुनः बहाल किया। वस्तुतः कुछ आइपीओ में 20 से अधिक गुना अभिदान किया गया। म्यूच्युअल फंडों द्वारा संसाधन जुटाया जाना भी काफी बढ़ा। शेयर बाजार में अप्रैल-सितंबर 2009 के दौरान अस्थिरता पिछले वर्ष की इसी अवधि की तुलना में कुछ अधिक थी (सारणी 5.13), जो वैश्विक अर्थव्यवस्था के संबंध में बीच-बीच हुई अनिश्चितता और घरेलू मानसून की स्थिति के वास्तविक प्रभाव के बारे में बदलते बोध से उत्पन्न हुई थी। नकदी खंड और बाजार पूँजीकरण खंड का कुल कारोबार अप्रैल-सितंबर 2008 की तुलना में अप्रैल-सितंबर 2009 में बढ़ा। एनएसई के डेरिवेटिव खंड में कुल कारोबार भी इस अवधि के दौरान अधिक हुआ।

प्राथमिक बाजार

V.31 घरेलू वित्तीय बाजार के प्राथमिक बाजार खंड के कार्यकलाप में जून 2009 से पुनरुत्थान के संकेत मिले हैं। संचयी रूप में, सार्वजनिक निर्गमों से जुटाये गये संसाधनों में अप्रैल-सितंबर 2009 के दौरान काफी बढ़ोतरी हुई (सारणी 5.14)। भारतीय कंपनियों द्वारा यूरो के निर्गमों से जुटाये गये संसाधनों में भी उल्लेखनीय बढ़ोतरी हुई।

V.32 प्राइवेट प्लेसमेंट द्वारा जुटाये गये संसाधनों में अप्रैल-सितंबर 2009 के दौरान (नवीनतम उपलब्ध आँकड़े) 28.7 प्रतिशत की बढ़ोतरी हुई, जबकि अप्रैल-जून 2008 के दौरान इसमें 15.7 प्रतिशत की गिरावट हुई थी। वित्तीय मध्यस्थों (सरकारी और निजी क्षेत्र, दोनों) के माध्यम से जुटाये गये संसाधनों में 19.1 प्रतिशत की गिरावट दर्ज की गयी, जबकि इसी अवधि में गैर वित्तीय मध्यस्थों के माध्यम से जुटाये गये संसाधनों में 94.6 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गयी।

सारणी 5.13: शेयर बाजार संकेतक

संकेतक	बीएसई				एनएसई			
	2007-08	2008-09	अप्रैल-सितंबर		2007-08	2008-09	अप्रैल-सितंबर	
			2008-09	2009-10			2008-09	2009-10
1	2	3	4	5	6	7	8	9
1. बीएसई सेंसेक्स/एसएंडपी निफ्टी								
(i) अवधि के अंत में	15644	9709	12860	17127	4735	3021	3921	5084
(ii) औसत	16569	12366	15059	14298	4897	3731	4511	4284
2. परिवर्तन का गुणांक	13.7	24.2	8.7	12.5	14.5	23.2	8.3	11.6
3. कीमत-अर्जन अनुपात (अवधि के अंत में)*	20.1	13.7	16.2	22.2	20.6	14.3	16.9	22.9
4. कीमत-बही मूल्य अनुपात (अवधि के अंत में)*	5.2	2.7	3.4	4.1	5.1	2.5	3.3	3.8
5. प्रतिफल* (प्रतिशत प्रतिवर्ष) (अवधि के अंत में)	1.1	1.8	1.4	1.1	1.1	1.9	1.5	1.0
6. सूचीबद्ध कंपनियाँ	4,867	4,929	4,926	4,946	1,381	1,432	1,424	1,435
7. नकदी खंड में कारोबार (करोड़ रु.)	15,78,856	11,00,074	6,82,658	7,62,205	35,51,038	27,52,023	16,05,906	22,87,846
8. डेरिवेटिव खंड में कारोबार (करोड़ रु.)	2,42,308	12,268	11,983	1,007	1,30,90,478	1,10,10,482	59,63,895	83,38,128
9. बाजार पूँजीकरण (करोड़ रु.) @	51,38,015	30,86,076	41,65,388	57,08,338	48,58,122	28,96,194	39,00,185	53,53,880
10. जीडीपी की तुलना में बाजार पूँजीकरण अनुपात (प्रतिशत)	108.8	58.0	78.3	107.3	102.9	54.4	73.3	100.6

*: बीएसई में शामिल 30 शेयरों तथा एसएंडपी सीएनएक्स निफ्टी में शामिल 50 शेयरों के आधार पर। @: अवधि के अंत में
स्रोत: बंबई शेयर बाजार लि. (बीएसई) तथा नेशनल स्टॉक एक्सचेंज ऑफ इंडिया लि. (एनएसई)।

सारणी 5.14: प्राथमिक बाजार से संसाधन संग्रहण				
(राशि करोड़ रुपए में)				
मद	निर्गमों की संख्या	राशि	निर्गमों की संख्या	राशि
	2008-09 (अप्रैल-सितंबर)		2009-10 (अप्रैल-सितंबर)	
1	2	3	4	5
अ. विवरणिका और राइट निर्गम*				
1. निजी क्षेत्र (क + ख)	32	12,361	25	6,814
क) वित्तीय	1	448	-	-
ख) गैर वित्तीय	31	11,913	25	6,814
2. सार्वजनिक क्षेत्र (क+ख+ग)	-	-	2	6,803
क) सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम	-	-	1	4,026
ख) सरकारी कंपनियां	-	-	1	2,777
ग) बैंक / वित्तीय संस्थाएं	-	-	-	-
3. कुल (1+2)	32	12,361	27	13,617
जिनमें से :				
(i) इक्विटी	32	12,361	26	13,437
(ii) ऋण	-	-	1	180
जापन:				
ख. यूरो निर्गम	10	4,652	8	12,645
अ : अनंतिम * : बिक्री प्रस्तावों को छोड़कर - : शून्य/ नगण्य				

V.33 अप्रैल-सितंबर 2009 के दौरान म्यूच्युअल फंडों द्वारा जुटाये गये संसाधनों में तेज वृद्धि चलनिधि स्थिति सहज रहने और शेयर बाजारों में काफी फायदा देखे जाने से हुई (सारणी 5.15)। स्कीमवार दृष्टि से आय/

ऋण उन्मुख स्कीमों में 1,07,012 करोड़ रुपयों का निवल अंतर्वाह देखा गया, जबकि वृद्धि/इक्विटी उन्मुख स्कीमों में 5,721 करोड़ रुपयों का निवल अंतर्वाह दर्ज किया गया।

सारणी 5.15: म्यूच्युअल फंडों द्वारा संसाधन संग्रहण						
(करोड़ रुपए)						
श्रेणी	अप्रैल-मार्च		अप्रैल-सितंबर			
	2008-09		2008-09		2009-10	
	निवल संग्रहण@	निवल आस्तियां #	निवल संग्रहण@	निवल आस्तियां #	निवल संग्रहण@	निवल आस्तियां #
1	2	3	4	5	6	7
निजी क्षेत्र	-34,017	3,35,527	-2,667	3,95,074	83,864	4,95,709
सरकारी क्षेत्र *	5,721	81,772	5,141	88,205	28,563	1,32,290
जोड़	-28,296	4,17,300	2,473	4,83,278	1,12,427	6,27,999
@ : चुकौतियों को घटाकर # : अवधि के अंत में * : यूटीआइ म्यूच्युअल फंड सहित						
टिप्पणी: आंकड़ों में फंड ऑफ फंड्स योजना के अंतर्गत संगृहीत निधियां शामिल नहीं हैं।						
स्रोत: भारतीय प्रतिभूति और विनियम बोर्ड।						

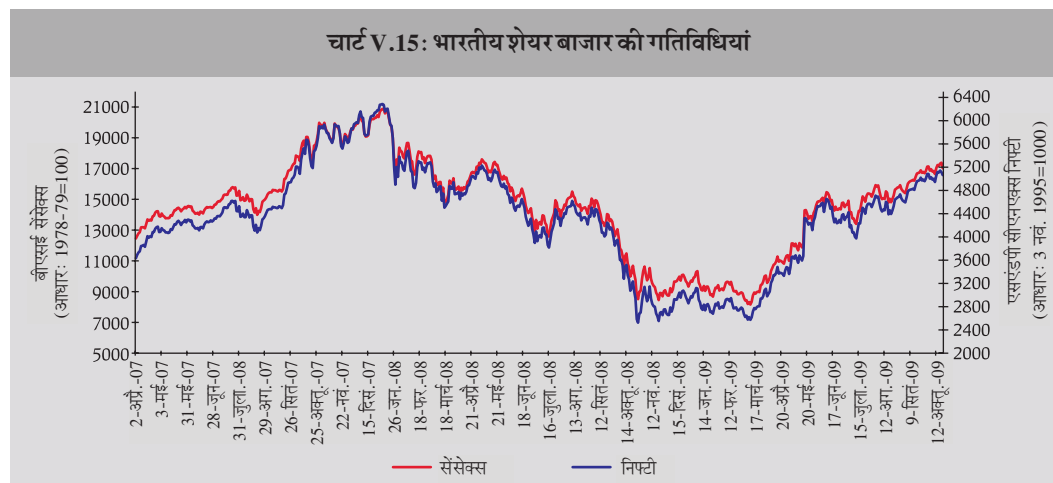
अनुबंधी बाजार

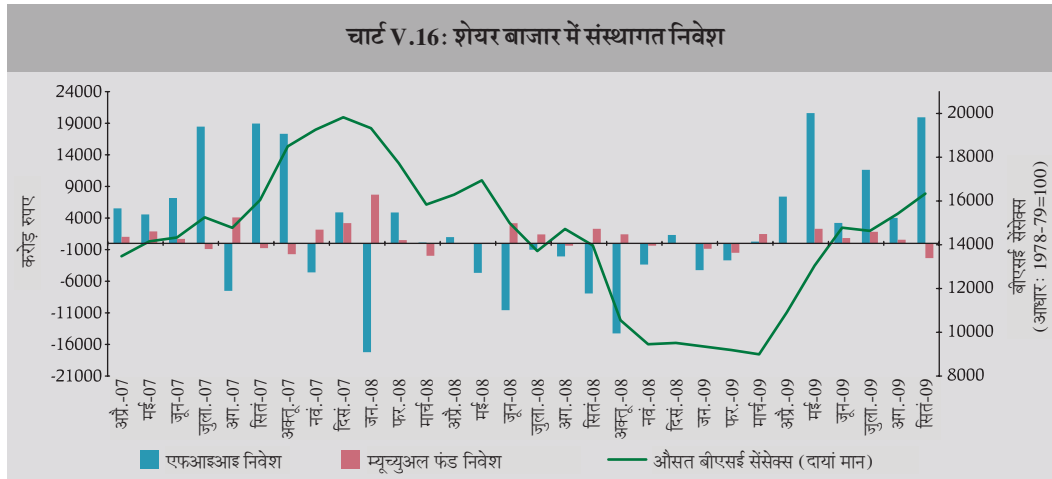
V.34 बाजार का रुझान वर्ष 2009-10 की दूसरी तिमाही के दौरान सकारात्मक बना रहा। जुलाई 2009 के आरंभ में गिरावट की प्रवृत्ति बने रहने के बाद बाजार में तेजी दिखाई पड़ी, जो अंतरराष्ट्रीय इक्विटी बाजारों की सुदृढ़ प्रवृत्ति, कुछ भारतीय कंपनियों और बैंकों द्वारा उम्मीद से बेहतर आय-परिणाम प्राप्त करने और उसके अतिरिक्त रिजर्व बैंक द्वारा एफआइआइ और एनआरआइ को भारतीय निक्षेपागार रसीदों में निवेश करने की अनुमति देने से हुई थी। भारतीय शेयर बाजारों में अगस्त 2009 की दूसरी तिमाही में पुनः कुछ गिरावट देखी गई, जो अमरीका से बेरोजगारी और खुदरा आँकड़ों से प्राप्त नकारात्मक प्रतिसूचना, चीन में बैंक उधार प्रदान के क्षेत्र में कड़ा रुख अपनाए जाने की आशंका, भारत में अपूर्ण मानसून और निर्यात में निरंतर आती गिरावट के कारण हुआ। उसके बाद बाजारों में अमरीका और यूरो क्षेत्र से प्राप्त उम्मीद से बेहतर आँकड़े, जून 2009 में भारत में तगड़ी आइआइपी वृद्धि और वर्ष 2009-10 की पहली तिमाही में उच्चतर जीडीपी वृद्धि, के चलते समुत्थान हुआ। सकारात्मक रुझान पूरे सितंबर 2009 में बना रहा, जो मुख्यतः सुदृढ़ वैश्विक संकेतों के कारण हुआ, जैसे कि जी-20 देशों के नेताओं द्वारा प्रेरक उपायों को बनाये रखने का वचन देना,

फैडरल रिजर्व का सर्वेक्षण, जिसमें अमरीका में जुलाई-अगस्त 2009 में अधिकांश प्रदेशों में आर्थिक कार्यकलाप के स्थिर रहने या उसमें सुधार होने की रिपोर्ट की गयी थी, चीन के औद्योगिक उत्पादन में तगड़ी वृद्धि, बैंक ऑफ जापान द्वारा अपने आर्थिक दृष्टिकोण का कोटि उन्नयन करना तथा सकारात्मक घरेलू गतिविधियाँ, यथा, प्रमुख भारतीय बैंकों और कंपनियों द्वारा अदा किया गया उच्चतर अग्रिम कर, जिससे तगड़ी तिमाही आय का संकेत मिलता है। सेंसेक्स ने अंत-सितंबर 2009 तक 17000 अंकों का आँकड़ा पार कर लिया, जिसमें एफआइआइ पूँजी अंतर्वाह और सकारात्मक वैश्विक आँकड़ों का भारी योगदान था। अंत-सितंबर 2009 में बीएसई सेंसेक्स और सीएनएक्स निफ्टी, दोनों ने अंत-जून 2009 की तुलना में लगभग 18 प्रतिशत का लाभ दर्ज किया (चार्ट V.15)।

V.35 एफआइआइ और म्यूच्युअल फंडों ने वर्ष 2009-10 की दूसरी तिमाही में शेयर बाजार में निवल खरीदारी की। भारतीय प्रतिभूति और विनियम बोर्ड (सेबी) द्वारा जारी किये गये आँकड़ों के अनुसार एफआइआइ ने वर्ष 2009-10 की दूसरी तिमाही के दौरान भारतीय इक्विटी बाजार में 7.4 बिलियन अमरीकी डॉलर की निवल खरीदारी की, जबकि पिछले वर्ष की तुलनीय अवधि में उन्होंने 2.4 बिलियन अमरीकी

चार्ट V.15: भारतीय शेयर बाजार की गतिविधियाँ





डॉलर की निवल बिक्री की थी (चार्ट V.16)। तथापि, वर्ष 2009-10 की दूसरी तिमाही में म्यूचुअल फंडों की खरीदारी पिछले वर्ष की इसी अवधि की तुलना में घटी।

V.36 सेक्टरवार सूचकांकों में खरीदारी का दबाव चालू वित्तीय वर्ष (अंत सितंबर 2009 तक) के दौरान बढ़ती

निवेशक दिलचस्पी के साथ सभी स्तरों पर देखा गया। इसके परिणामस्वरूप स्थावर संपदा, धातु, बैंकिंग, ऑटो, उपभोक्ता टिकाऊ वस्तुओं, पूँजीगत वस्तुओं और सूचना प्रौद्योगिकी क्षेत्र शेयर, जैसे क्षेत्रों में कीमतों में महत्वपूर्ण वृद्धि दर्ज की गई (सारणी 5.16)।

सारणी 5.16: बीएसई क्षेत्रवार स्टॉक सूचकांक

(आधार : 1978-79=100)

क्षेत्र	घटबढ़ (प्रतिशत)		
	मार्च 2008 के अंत में@	मार्च 2009 के अंत में@	सितंबर 2009 के अंत में#
1	2	3	4
शीघ्र खपतवाली उपभोक्ता वस्तुएं	31.7	-11.1	26.5
सरकारी क्षेत्र के उपक्रम	25.4	-29.6	70.3
सूचना प्रौद्योगिकी	-27.6	-35.6	100.0
ऑटो	-7.1	-32.3	116.4
तेल और गैस	56.0	-29.6	48.5
धातु	65.2	-58.7	144.6
हेल्थकेयर	5.4	-26.5	55.6
बैंकेक्स	18.0	-41.8	119.5
स्थावर संपदा	33.8	-79.3	188.9
पूँजीगत माल	54.4	-53.8	112.8
उपभोक्ता टिकाऊ वस्तुएं	8.8	-58.1	115.8
बीएसई 500	24.3	-42.8	86.0
बीएसई सेंसेक्स	19.7	-37.9	76.4

@ : वर्ष-दर-वर्ष घटबढ़

: मार्च 2009 के अंत की तुलना में घटबढ़

स्रोत : बंबई शेयर बाजार लि.

V.37 वर्ष 2009 की तीसरी तिमाही के दौरान अंतरराष्ट्रीय वित्तीय बाजारों ने उच्चतर भरोसा, उन्नत जोखिम वहन क्षमता, स्प्रेड में संकुचन और कम अस्थिरता का प्रदर्शन किया। अंतर-बैंक मुद्रा बाजारों में सभी प्रमुख स्प्रेड और भी न्यून स्तर तक संकुचित हुए, जिसका कारण था घटती जोखिम और प्रमुख केंद्रीय बैंकों द्वारा नरम नीतिगत दृष्टिकोण को जारी रखना; ऋण बाजारों में भी सुधार स्पष्ट दिखाई दिये, हालाँकि बंधक बाजार के कुछ खंडों में दुर्बलता देखी गयी। अंतरराष्ट्रीय वित्तीय संस्थाओं द्वारा डिलिवरेजिंग के बावजूद कंपनी बांड के निर्गमों की गति तेज हुई, जिसने अंतर्निहित निवेश और वास्तविक कार्यकलाप में गति का संकेत दिया। ईएमई बांडों पर जोखिम स्प्रेड महत्वपूर्ण रूप से घट गया, जिसने ईएमई आस्तियों के प्रति जोखिम वहन क्षमता बढ़ने और अंतरराष्ट्रीय पूँजी तक उनकी पहुँच में सुधार होने का संकेत दिया। उन्नत अर्थव्यवस्थाओं और ईएमई, दोनों में, इक्विटी बाजारों में वर्ष 2009 की तीसरी तिमाही में और भी समुत्थान हुआ।

V.38 घरेलू वित्तीय बाजारों में वर्ष 2009-10 की दूसरी तिमाही में विविध खंडों में लेनदेन के परिमाण में तेजी दिखने के अतिरिक्त जोखिम और चलनिधि प्रीमिया में गिरावट देखी गयी। मुद्रा बाजार में सहज चलनिधि स्थिति का बने रहना रिपोर्ट रिपो परिचालन के माध्यम से बड़ा अवशोषण किये जाने में स्पष्ट दिखाई दिया। इस प्रचुर चलनिधि की स्थिति ने मुद्रा बाजार में माँग दरों के एलएएफ

कोरीडोर के भीतर मँडराते रहने के साथ न्यून ब्याज दरों को सुविधाजनक बनाया। सीबीएलओ और बाजार रिपो खंडों में लेनदेन वर्ष 2009-10 की दूसरी तिमाही में अधिक होता रहा, जो सहज चलनिधि स्थिति का संकेत देता है। सीपी के निर्गम में भी महत्वपूर्ण रूप से बढ़ोतरी हुई। तथापि, दीर्घावधि प्रतिफल में सरकारी और कंपनी बांडों, दोनों के लिए कुछ बढ़ोतरी देखी गयी, जो सरकार के उधार कार्यक्रमों के बारे में चिंता, आरंभिक स्फीतिकारक दबाव और वास्तविक कार्यकलाप में प्रत्याशित समुत्थान के साथ ऋण के लिए माँग में संभावित बढ़ोतरी को प्रतिबिंबित करता है। यद्यपि निजी क्षेत्र को बैंक-ऋण कम स्तर पर बना रहा, फिर भी, नीतिगत दरों का कर्ज दरों में संचरण स्पष्ट था। इक्विटी बाजारों में महत्वपूर्ण समुत्थान देखा गया, जो उन्नत घरेलू मूलभूत तत्वों की सुदृढ़ता, वैश्विक अर्थव्यवस्था में समुत्थान के स्पष्ट संकेतों और पूँजी प्रवाह के पुनः बहाल होने के कारण हुआ। प्राथमिक बाजार में वर्ष 2009-10 की दूसरी तिमाही में कंपनियों द्वारा संसाधन जुटाने के कार्य में सुधार हुआ। चलनिधि स्थिति के सहज रहने से म्यूच्युअल फंडों द्वारा जुटाये गये संसाधनों में काफी वृद्धि दर्ज की गयी। स्थावर संपदा, धातु, बैंकिंग, ऑटो, उपभोक्ता टिकाऊ वस्तुओं, पूँजीगत वस्तुओं और सूचना प्रौद्योगिकी जैसे क्षेत्रों में इक्विटी कीमतों में काफी लाभ होता देखा गया। समग्रतः, घरेलू वित्तीय बाजार सुस्थिर और वृद्धि में समुत्थान का समर्थनकारी बना रहा।